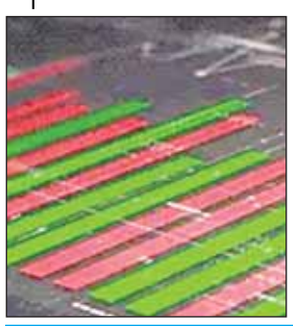

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश ■ राजस्थान ■ हरियाणा ■ छत्तीसगढ़ ■ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17

5 सेंसेक्स में 1,000 अंक से ज्यादा की तेजी, सम्पादकीय यूट्यूब पर बढ़ रही अनावश्यक कंटेंट डाल अडाणी फैमिली ने अंबुजा सीमेंट में 6,661 करोड़ 5

वर्ष 18 ● अंक 42 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online भोपाल, शुक्रवार 29 मार्च 2024 email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com, hindustanexpresshe@Gmail.com मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

सरकार अग्निवीर योजना में बदलाव को तैयार सेना को युवाओं की जरूरतः राजनाथ सिंह

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि उनकी सरकार जरूरत पड़ने पर अग्निवीर भर्ती योजना में बदलाव के लिए तैयार है। एक समिट में बोलते हुए रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि अग्निवीरों का भविष्य सुरक्षित रहे।

उन्होंने कहा- सेना को युवाओं की जरूरत है। मुझे लगता है कि युवा उत्साह से भरा होता है। वे टेक-लवर होते हैं। हमने इस बात का उचित ध्यान रखा है कि उनका भविष्य भी सुरक्षित रहे। जरूरत पड़ी तो हम बदलाव भी करेंगे। अग्निवीर स्कीम लागू होते ही विवादों में आ गई थी। इस स्कीम में सिर्फ 4 साल की सर्विस को विपक्ष ने युवाओं के साथ धोखा बताया था। कांग्रेस ने अपने चुनावी कैंपेन में अग्निवीर स्कीम को मुख्य मुद्दा बनाया है।

केंद्र सरकार ने 14 जून 2022 को सेना की तीनों शाखाओं- थलसेना, नौसेना और वायुसेना में युवाओं की बड़ी संख्या में भर्ती के लिए अग्निपथ भर्ती योजना शुरू की थी। इस स्कीम के तहत नौजवानों को सिर्फ 4 साल के लिए डिफेंस फोर्स में सेवा देनी होगी।

उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में भारत जोड़ो न्याय यात्रा में इसी महीने राहुल गांधी ने ग्वालियर में अग्निवीर भर्ती से जुड़े युवाओं, पूर्व सैनिकों से करीब 40 मिनट तक बात की। यहां सेना की तैयारी कर रहे युवाओं ने बताया कि जो सम्मान फौजी बनने पर मिलता था, अब वो अग्निवीर बनने पर नहीं मिलता। न शहीद का दर्जा मिलता है न ही पेंशन और कैंटीन की सुविधा मिलती है।

दुनिया में भारतीय संस्कृति का परचम फहरा रही मोदी सरकारः मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने खजुराहो लोकसभा के चंदला में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन को किया संबोधित

खजुराहो। पांच सौ सालों के इंतजार के बाद भगवान राम का जो भव्य मंदिर अयोध्या में बना है, वह 1947 के बाद ही बन जाना था, लेकिन कांग्रेस ने हिंदू-मुस्लिमों को लड़ाने के लिए इस मुद्दे का लटकाए रखा। राम मंदिर आंदोलन के दौरान सपा की सरकार ने निहत्थे रामभक्तों पर गोलियां चलवाई। मामला जब कोर्ट में पहुंचा, तो कांग्रेस के वकीलों ने भगवान राम के अस्तित्व पर सवाल उठाए। कांग्रेसियों का पेट इतने से नहीं भरा। कोर्ट के फैसले के बाद जब मंदिर बना और प्राण प्रतिष्ठा के लिए कांग्रेसियों को आमंत्रण दिया गया, तो उन्होंने उस निमंत्रण को ठुकराकर भगवान राम का अपमान किया। ये भगवान राम को ठुकराने वाले, हिंदुओं और हिंदुत्व का अपमान करने वाले, रामभक्तों पर गोलियां चलवाने वाले बुंदेलखंड में पैर जमाने की कोशिश कर रहे हैं, हमें इस चुनाव में इन्हें सबक सिखाना है। कमल का बटन दबाकर इनका हिसाब चुकता करना है। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने गुरुवार को खजुराहो लोकसभा के चंदला में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कही।

दुनिया में भारतीय संस्कृति का परचम फहरा रही मोदी सरकारः डॉ. मोहन यादव

सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि बुंदेलखंड आल्हा-ऊदल का क्षेत्र रहा है, जिनकी तलवार की धाक दूर-दूर तक रही है। शताब्दियों से भारत की दुनिया में अलग पहचान रही है। लेकिन कुछ खराब समय आया और पहले बाहर से आए दुश्मनों और फिर कांग्रेस ने देश का नुकसान किया। लेकिन आज मोदी जी का समय है। मोदी सरकार आपकी अपनी सरकार है, भारतीय संस्कृति का परचम फहराने वाली सरकार है। देश का बच्चा-बच्चा मोदी मय है और देश के हर हिस्से, हर कोने से आवाज उठ रही है-'फिर एक बार, मोदी सरकार'। अब तो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी यह कहने लगे हैं कि 'अबकी बार,400 पार'।

अब पीओके के लोग भी मोदी जी को चाहते हैं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में जब सोनिया-मनमोहन की कांग्रेस सरकार बनी, तो उन्होंने अटलजी की सरकार की सारी योजनाओं, सारे विकास कार्यों को बंद कर दिया। स्वर्णिम चतुर्भुज जैसी देश का कायाकल्प करने वाली योजना को भी बंद कर दिया। कांग्रेस के छोटे मियां राहुल गांधी सार्वजनिक रूप से दस्तावेज फाड़कर मंत्रिमंडल के फैसलों का मखौल उड़ा रहे थे। आतंकवादी देश में कहीं भी हमला और बम धमाके करते रहते थे। लेकिन 2014 में प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की सरकार आई। इसके बाद तो ऐसा माहौल बना कि हमारी सरकार ने आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारने का रिकॉर्ड बना दिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने न सिर्फ अटलजी के कामों को बढ़ाया, बल्कि देश को जिस तरीके से आगे बढ़ाया, उसे देखकर सारी दुनिया उनसे प्रेम करती है। अब तो पाक अधिकृत कश्मीर के लोग भी मोदी जी को चाहते हैं। सारी दुनिया में भारत का मान-सम्मान बढ़ रहा है।

आप फिर मोदी जी की सरकार बनाइये, क्षेत्र की तस्वीर बदल जाएगी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आपका क्षेत्र कला-संस्कृति, आचरण, विचार, वीरता और बहादुरी के साथ सर्वगुण संपन्न रहा है, लेकिन कमी रही तो बस इस बात की कि कांग्रेस की सरकारों की निगाह इस पर नहीं पड़ी। प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने इस क्षेत्र को 45 हजार करोड़ की लागत वाली केन-बेतवा लिंक परियोजना दी है, जो स्व. अटलजी का सपना था। इस परियोजना के पूरे हो जाने पर आपके क्षेत्र में भरपूर पानी होगा। खजुराहो में प्रधानमंत्री जी ने जी-20 की बैठक कराई। जल्द ही आपके यहां आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज खुलने जा रहा है। पायलट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, एलोपैथिक मेडिकल कॉलेज, एग्रीकल्चर और हार्टीकल्चर कॉलेज बनेंगे। आचार संहिता के बाद चंदला नगर परिषद को नगर पालिका बनाएंगे। इसके अलावा भी जो मांगें हैं, उन्हें पूरा करेंगे। फसलों को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई की जाएगी। डॉ. यादव ने कहा कि आप एक बार फिर मोदी जी की सरकार बनाइये, अगले पांच सालों में इस क्षेत्र की तस्वीर बदल जाएगी।

भारत को नं.1 बनाने के लिए हर वोट मोदी को दिलाने का संकल्प लें

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि वर्तमान में देश के सांस्कृतिक अनुष्ठान का पर्व चल रहा है। काशी में विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन में महाकाल महालोक और अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हुआ है। धार की भोजशाला में सर्वे शुरू हो चुका है और जरूरत पड़ी तो हर कोर्ट में लड़ाई लड़ेंगे। डॉ. यादव ने कहा कि अगली बारी मथुरा में 'जय कन्हैयालाल की' गुंजाने की है। डॉ. यादव ने कहा कि भारत को भव्य और दिव्य बनाने, दुनिया का नं.1 देश बनाने तथा मध्यप्रदेश को देश का नं.1 प्रदेश बनाने के लिए आप सभी हर वोट मोदी जी को दिलाने का संकल्प लें।

600 से ज्यादा प्रमुख वकीलों ने न्यायपालिका पर खास समूह के हमलों पर जताई चिंता

सीजेआई चंद्रचूड़ को लिखा पत्र

नई दिल्ली। देश के जाने-माने 500 से ज्यादा वकीलों ने चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ को चिट्ठी लिखी है। पत्र लिखने वालों में वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे से लेकर बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा समेत तमाम प्रमुख नाम शामिल हैं। इन वकीलों ने चिट्ठी में न्यापालिका की अखंडता पर खतरे को लेकर चिंता जताई है। इन वकीलों का कहना है कि कुछ खास समूह न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं और कोर्ट के फैसलों पर असर डाल रहे हैं।पत्र में कहा गया है कि यह समूह राजनीतिक एजेडों के साथ आधारहीन आरोप लगा रहे हैं और न्यायपालिका की छवि के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहे हैं। चिट्ठी में कहा गया है कि भ्रष्टाचार के मामलों में घिरे राजनीतिक चेहरों से जुड़े केसों में यह हथकंडे जाहिर तौर पर दिखते हैं। ऐसे मामलों में अदालती फैसलों को प्रभावित करने और न्यायपालिका को बदनाम करने के प्रयास सबसे अधिक स्पष्ट होते हैं। पत्र में कहा गया है कि कुछ खास समूह कथित तौर पर झूठे नैरेटिव गढ़ कर न्यायपालिका के कामकाज की गलत छवि पेश करना चाहते हैं। यह समूह मौजूदा वक्त की अदालतों की तुलना कोर्ट्स के एक कथित स्वर्णिम युग से करते हैं, ताकि न्यायिक फैसलों को प्रभावित किया जा सके और न्यापालिका पर जनता के विश्वास को डिगाया जा सके। आधिकारिक सूत्रों द्वारा साझा किए गए पत्र में बिना नाम लिए वकीलों के एक वर्ग पर निशाना साधा गया है। इसमें आरोप लगाया गया है कि वे दिन में नेताओं का बचाव करते हैं और फिर रात में मीडिया के जरिए जजों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। 'न्यायपालिका पर खतरा : राजनीतिक और पेशेवर दबाव से न्यायपालिका को बचाना' शीर्षक वाली इस चिट्ठी में 600 से ज्यादा वकीलों के नाम हैं। इनमें आदिश अग्रवाल, चेतन मित्तल, पिंकी आनंद, हितेश जैन, उज्ज्वला पवार, उदय होला और स्वरूपमा चतुर्वेदी जैसे अन्य प्रमुख नाम भी शामिल हैं। पत्र लिखने वाले वकीलों ने कहा है कि इस समूह ने 'बेंच फिक्सिंग' की पूरी कहानी गढ़ी है, जो न केवल अपमानजनक है बल्कि अदालतों के सम्मान और गरिमा पर आघात है।

ज्योतिरादित्य सिंधिया का शिवपुरी में आह्वान कहा- आगामी 7 मई को करना है संग्राम

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

शिवपुरी। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर अपने क्षेत्र का तूफ़ानी दौरा कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री इस बार अपने तीन दिवसीय दौरे पर गुना पहुँचे। केंद्रीय मंत्री सिंधिया सुबह अपने शिवपुरी आवास बॉम्बे कोठी में जनसंपर्क करने के बाद पडोरा में रावत समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में समाज के हज़ारों लोगों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि रावत समाज से मेरा पारिवारिक सम्बंध है, आज इस कार्यक्रम में आकर मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूँ। रावत समाज ने माँ भारती की खूब सेवा की है, अस्त्र और शस्त्र को पूजता है। रावत समाज ने खून और पसीने से इस भूमि को सींचा है और वीरता और बलिदान का प्रतीक है। रावत समाज ने मराठाओं के साथ मिलकर युद्ध लड़कर मुग़लों की विदाई की थी। आज समाज सेवा क्षेत्र, शिक्षा, कृषि व देश सेवा सैनिक बनकर रावत समाज के युवा कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया कश्मीर को 370 से मुक्त किया, अब हर बूथ पर 370 वोट बढ़ना चाहिए

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नारा दिया है अबकी बार 400 पार! और इसे पूरा करने के लिए हमें शिवपुरी, गुना और अशोकनगर के हर बूथ पर 370 वोट बढ़ाना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर को धारा 370 से मुक्त किया है और हमें भी जार बूथ पर 370 वोट बढ़ाने हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हमारे किसान भाइयों को किसान सम्मान निधि, बहनों के लिए लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क अनाज की व्यवस्था की है, आयुष्मान भारत से निशुल्क इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी है कि हर हितग्राही को योजना का लाभ मिले और 2047 तक विकसित भारत का निर्माण हो। अयोध्या में प्रभु श्री राम जी ने अपने महल में 500 साल बाद होली मनाई है, आगामी 4 जून को हमें पुनः होली मनानी है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा मैं हूँ अशोकनगर शिवपुरी की मकड़ी

केंद्रीय मंत्री ने अपने अभिभाषण में कहा मैं अशोकनगर शिवपुरी की मकड़ी हूँ। मनिखेड़ा से पानी, नहर, कोलारस से बामोरी तक सड़क बनाई, यहाँ से राजस्थान बॉर्डर तक सड़क बनाई आज पढोरा को तीनो तरफ़ से मैंने हाईवे से घेर दिया है। मैंने हर वो काम किया जो आपने कहा और वो भी किया जो आपने नहीं भी कहा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आगामी 07 मई को संग्राम करना है, यह नए जमाने का युद्ध है जिसमें तलवार नहीं ईवीएम का बटन दबाना है और करेंट से विरोधियों को परास्त करना है। कार्यक्रम में मंच पर सीताराम रावत पढोरा, विधायक सरला रावत, पूर्व विधायक रणवीर रावत, चंदन सिंह पटेल, रामस्वरूप, भारत सिंह, मुन्नालाल रावत, धर्मवीर रावत, लक्ष्मण सिंह रावत, गोपीराम रावत, यशपाल रावत, मुरारी मीना, इंदर मीना, सीता राम रावत, देवेंद्र जैन व सैंकड़ों अन्य समाज के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

कार्यकर्ता नरेंद्र मोदी की ताकत को मजबूत करने के लिए चुनाव अभियान में तेजी लाएं: विस अध्यक्ष नरेंद्र सिंह

विधानसभा अध्यक्ष ने मोदी गुलाल लगाकर कार्यकर्ताओं के साथ खेली होली

लहार विधायक का होली मिलन समारोह नगर के सरयू गार्डन मे सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भिण्ड। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर अपने निर्धारित कार्यक्रम के तहत जिले जिले के विधानसभा क्षेत्र लहार में नगर के सरयू गार्डन में लहार विधायक अम्बरीश शर्मा गुड्डू द्वारा आयोजित होली मिलन के पावन पर्व पर सभी अपने स्नेहजनों से मुलाकात कर होली मिलन में मोदी गुलाल लगाकर सभी को शुभकामनाएं दीं और उन्होंने दो मिशन 2023 के विधानसभा चुनाव में प्रत्येक बूथ पर कांग्रेस को उखाड़ फेंका था, इसी तरह हमें नरेंद्र मोदी को तीसरी बार केंद्र में प्रधानमंत्री बनने के लिए भाजपा प्रत्याशी संध्या राय को प्रचंड बहुमत के साथ जीत कर दिल्ली पहुंचना है। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि होली हमारा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण त्यौहार है। हम एक-दूसरे के प्रति गुलाल लगाकर शांति और संभावना सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिकता को आगे बढ़ने का काम करते हैं। होली का त्यौहार रंग पंचमी तक बनाए जाने की परंपरा भी हुए। उन्होंने कहा कि भक्त प्रह्लाद ने अपनी पूरी भक्ति के साथ भगवान का भजन किया

शेष पृष्ठ 2 पर...

विस अध्यक्ष नरेंद्र सिंह आज पोरसा आयेंगे

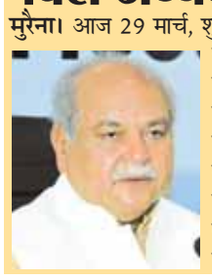

मुरैना। आज 29 मार्च, शुक्रवार को विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर पोरसा आ रहे हैं। बताया गया है कि श्री तोमर संत वाटिका में व्यापारी संघ के द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में सहभागिता करेंगे। यह कार्यक्रम दोपहर 12 बजे होगा। व्यापारियों ने सभी से कार्यक्रम में उपस्थित रहने की अपील की है। अपील करने वालों में पूर्व नगर मंडल अध्यक्ष हरिशंकर गुप्ता, भोला गुप्ता, जैसाराम गुप्ता, बालकिशन वर्मा, पवन सिंघल, नत्थी लाल राठौर आदि शामिल हैं। उक्त कार्यक्रम के बाद विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर दोपहर 2 बजे पोरसा के वरिष्ठ नागरिकों से चर्चा करेंगे। दोपहर 4:30 बजे उनका अम्बाह आगमन होगा तथा स्थानीय कार्यक्रमों में सहभागिता करने के बाद श्री तोमर ग्वालियर के लिए प्रस्थान कर जायेंगे।

फिलिस्तीनियों से घर-जमीन और अधिकार छीने गए : एस जयशंकर

आर.एन.एस.

कुआलालम्पुर। मलेशिया दौरे पर गए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इजराइल-हमास जंग पर बयान दिया है। उन्होंने कहा, इजराइल-हमास जंग का सबसे बड़ा तथ्य यही है कि फिलिस्तीनियों से उनका घर, उनकी जमीन और अधिकार छीन लिए गए हैं। कुआलालंपुर में भारतीय समुदाय से बात करते हुए विदेश मंत्री ने कहा, पूरे विवाद में सच या झूठ जो भी हो, लेकिन मानवीय कानूनों का पालन करना जरूरी है। इसके साथ ही जयशंकर ने 7 अक्टूबर को इजराइल पर हमास के अटैक को आतंकवादी हमला बताते हुए इसकी निंदा भी की।

इसके अलावा विदेश मंत्री ने भारत-चीन के रिश्तों पर भी बात की। जयशंकर ने कहा, दोनों देशों में द्विपक्षीय रिश्ते सामान्य तभी हो सकते हैं जब चीन की सेना पीछे हटे और उनकी तैनाती पुराने पॉइंट्स पर की जाए। हम चीन के सामने साफ शब्दों में ये बात रख चुके हैं। मेरे कर्तव्य है कि मैं अपने देशवासियों के लिए पहले सीमा को सुरक्षित करूं और मैं इससे कभी पीछे नहीं हटूंगा। विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि भारत अब चीन से कई मुद्दों पर बात कर रहा है। दोनों देशों के अधिकारी समय-समय पर मिलते रहते हैं। इस बीच दोनों देशों में सेनाओं को एलएसी तक न लाने पर सहमति बनी है। जयशंकर ने कहा, सीमा विवाद के बीच 1980 के दशक में दोनों देशों में इस बात सहमति बनी थी कि कोई भी अपनी सेनाओं को सीमा पर तैनात नहीं करेगा। साथ ही किसी भी स्थिति में हिंसा या खूनखराबे का सहारा नहीं लिया जाएगा। हालांकि, चीन ने साल 2020 में इस समझौते को तोड़ दिया और सीमा पर खूनखराबा हुआ।

मोदी जी अद्भुत काम कर रहें हैं : शिवराज सिंह चौहान

पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी में आयोजित होली मिलन समारोह में सहभागिता की, थिरकते हुए जमकर बजाया ढोल

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गुरूवार को विदिशा लोकसभा की बुधनी विधानसभा में आयोजित होली मिलन समारोह में सहभागिता की। कार्यक्रम में पूर्व सीएम ने ढोल बजाया और फाग पर जमकर थिरके। वहीं बहनों ने भी भैया शिवराज से मुलाकात कर उन्हें तिलक लगाया और चुनाव लड़ने के लिए राशि दी। इस दौरान श्री चौहान ने कहा कि, होली आनंद का त्यौहार है, रंगों का त्यौहार है, उत्सव का त्यौहार है और यहां कोई नेता नहीं और कोई जनता नहीं है हम सब एक ही हैं। जिंदगी आनंद से जीना चाहिए। होली के रंग आप सभी की जिंदगी में खुशियों के रंग भर दें यही भगवान से प्रार्थना है। सब सुखी हो, सबका मंगल हो और सबका कल्याण हो। वहीं श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, आगामी लोकसभा चुनाव में मोदी जी को सबसे सुंदर कमल का फूल भेंट करना है।

कांग्रेस कभी देश का भला नहीं कर सकती

पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, आयोध्या में भव्य और दिव्य राममंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन हो रहा था। पूरा देश दिवाली मना रहा था, उत्सव के रंग में डूबा हुआ था, सभी रामलला के दर्शन के आतुर थे। मैडम सोनिया और राहुल गांधी जी को भी सम्मानपूर्वक निमंत्रण दिया गया, लेकिन उन्होंने कहा कि, हम नहीं जाएंगे, विनाशकाले विपरित बुध्दि। आज कांग्रेस के विचारवान नेता कांग्रेस छोड़कर जा रहे हैं क्योंकि जब कांग्रेस सरकार में थी तब भी उन्होंने कोई विकास नहीं किया। कांग्रेस कभी भी देश की जनता का भला नहीं कर सकती है।

बहनों की आंखों में आंसु नहीं रहने दूंगा

पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, मैं बेटियों के पैर धोता हूं, मैं बहनों की पूजा करता हूं, मुझे हर स्त्री में देवी का रूप दिखाई देता है। बहनों की जिंदगी में आंसु नहीं रहने दूंगा, उनकी जिंदगी में खुशहाली लाकर रहूंगा। आखिर क्यो बेटा और बेटी में भेद किया जाएगा, क्या बेटियां कोख में मरती रहेंगी, ये सभी सवाल मुझे बैचेन करते हैं। इसलिए जब मैं मुख्यमंत्री बना तो सबसे पहले लाड़ली लक्ष्मी जैसी योजना बनाई। बेटिया बोझ नहीं वरदान है। फिर लाड़ली बहना योजना आई, ये योजनाएं जिंदगी बदलने के लिए बनी। मेरी बहनें मजबूर ना रहें, मजबूत बनें। उनका मान बढ़े, सम्मान बढ़े, आत्मसम्मान बढ़े। जब तक मेरी सांस चलेगी, तब तक बहनों के कल्याण के लिए काम करूंगा।

लोकतंत्र की आवाज हूँ मैं, मतदान के लिए तैयार हूँ मैं

फ्लैग मार्च के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदान का दिया गया संदेश

कमिश्नर, एडीजीपी, कलेक्टर, एसपी, जिपं सीईओ के नेतृत्व में अनूपपुर में निकाला गया फ्लैग मार्च

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। जिला मुख्यालय अनूपपुर स्थित सामतपुर तिराहा से रेलवे स्टेशन तक मतदाता जागरूकता तथा शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त मतदान के लिए पुलिस और प्रशासन द्वारा जनता में विश्वास कायम रखने के लिए फ्लैग मार्च किया गया। फ्लैग मार्च में शहडोल संभाग के कमिश्नर बाबू सिंह जामोद एवं शहडोल जोन के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डी.सी. सागर, कलेक्टर आशीष वशिष्ठ, पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह पवार, अपर कलेक्टर अमन वैष्णव, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार सिंह, संयुक्त कलेक्टर दिलीप पाण्डेय सहित अनुविभागीय दण्डाधिकारी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, थाना प्रभारी तथा पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी, पत्रकार राजेश शिवहरे ब्यूरो (हिंदुस्तान एक्सप्रेस) मीडिया कर्मी एवं कर्मचारी शामिल रहे।

फ्लैग मार्च के दौरान सामतपुर तिराहा, आदर्श मार्ग तथा रेलवे स्टेशन में नुक्कड़ सभा का आयोजन कर मतदाताओं को भयमुक्त होकर मतदान करने की अपील की गई। शहडोल संभाग के कमिश्नर बाबू सिंह जामोद ने कहा कि प्रशासन और पुलिस बल कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के लिए मुस्तैदी के साथ खड़ा है। शहडोल संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के शत-प्रतिशत् मतदाता मतदान तिथि 19 अप्रैल को अपने नजदीकी मतदान केन्द्र में जाकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर एक जिम्मेदार नागरिक बनें तथा अपने परिजन व आसपास के लोगों को भी मतदान के लिए प्रेरित करें।

शहडोल जोन के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक डी.सी. सागर ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाना हम सभी की जिम्मेदारी है। मतदाता बिना किसी डर के शत-प्रतिशत् मतदान करें। जनता की जान, माल की सुरक्षा के लिए पुलिस, प्रशासन तैनात है। लोकतंत्र की जड़ें मतदाताओं की वजह से ही मजबूत हैं। आज हम फक्र से कह सकते हैं कि हमारा लोकतंत्र विश्व में अग्रणी है। हर वोटर निर्णायक है। उन्होंने मतदाता जागरूकता स्लोगन ''लोकतंत्र की आवाज हूं मैं, मतदान के लिए तैयार हूं मैं'', ''हमारा लोकतंत्र महान, आओ करें मतदान'', ''लोकतंत्र का हूं मैं नायक, मेरा वोट बने निर्णायक'' के माध्यम से मतदाताओं को प्रेरित किया।

कलेक्टर आशीष वशिष्ठ ने मतदाताओं से 19 अप्रैल को मतदान केन्द्र पहुंचकर अपने मताधिकार का उपयोग सुनिश्चित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हम सबकी जिम्मेदारी है कि शत-प्रतिशत मतदान सुनिश्चित हो, इसके लिए सभी मतदाता को अपने मताधिकार का उपयोग दृढ़ संकल्प के साथ सुनिश्चित करने की अपील की।

पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह पवार ने कहा कि सभी मतदाता स्वतंत्र, निष्पक्ष, निर्भीक होकर मतदान तिथि 19 अप्रैल को अपने मताधिकार का प्रयोग करें। ताकि हमारे लोकतंत्र की मजबूती कायम रहे।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा ने कहा कि सभी मतदाता निर्भीक होकर भय, पक्षपात व प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना अपना मतदान 19 अप्रैल को करें। उन्होंने निर्वाचन के संबंध में बनाए गए सी-विजिल एप के संबंध में जानकारी देते हुए अपील की कि निर्वाचन से संबंधित शिकायतें सी-विजिल एप में करें, जिसका निराकरण 100 मिनट के अन्दर सुनिश्चित होता है। उन्होंने मतदाताओं से शत-प्रतिशत मतदान कर जिले को गौरान्वित करने की अपील की।

फ्लैग मार्च के माध्यम से पुलिस और प्रशासन द्वारा सुरक्षा के सदैव तत्पर का संदेश तथा जिम्मेदार मतदाता के लिए जनसमुदाय से शत-प्रतिशत मतदान की प्रतिबद्धता का संदेश दिया गया।

निर्वाचन के दायित्वों का निर्वहन निष्पक्षता, पारदर्शिता व सजगतापूर्वक करें: जनरल ऑब्जर्वर

निर्वाचन तैयारियों की सामान्य प्रेक्षक शांतनु गोतमारे ने की समीक्षा

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा शहडोल संसदीय क्षेत्र के लिए नियुक्त सामान्य प्रेक्षक शांतनु गोतमारे ने कलेक्ट्रेट स्थित नर्मदा सभागार में निर्वाचन तैयारियों के संबंध में समीक्षा बैठक की। बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष वशिष्ठ, पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह पवार, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी व उप जिला निर्वाचन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा, अपर कलेक्टर अमन वैष्णव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवकुमार सिंह, संयुक्त कलेक्टर दिलीप पाण्डेय सहित एसडीएम व सहायक रिटर्निंग अधिकारी व निर्वाचन दायित्वों के नोडल अधिकारी उपस्थित थे।

सामान्य प्रेक्षक शांतनु गोतमारे ने भारत निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देश के अनुरूप निर्वाचन के दायित्वों को निष्पक्षता, पारदर्शिता व सजगतापूर्वक करने के निर्देश दिए। उन्होंने बैठक में 85 वर्ष से अधिक के मतदाताओं, दिव्यांग व सेवा मतदाताओं, मतदान केन्द्रों की बुनियादी सुविधाओं, वोटर टर्नआउट, सामग्री प्रबंधन, प्रशिक्षण, परिवहन, पोस्टल बैलेट, मानव संसाधन, रेण्डमाईजेशन तथा मतदाता जागरूकता गतिविधियों, सुरक्षा व्यवस्था, चेकपोस्ट आदि के संबंध में जानकारी ली।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष वशिष्ठ द्वारा पॉवर प्वाईंट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से निर्वाचन की अब तक की तैयारियों के संबंध में जानकारी दी गई। उन्होंने एसएसटी, एफएसटी, सेक्टर ऑफीसर, वीएसटी, क्रिटीकल मतदान केन्द्रों, वल्नरेबल पॉकेट के चिन्हांकन, जप्ती की कार्यवाही, चेकपोस्ट में जांच तथा मतदान केन्द्रों में बुनियादी सुविधाओं, प्रशिक्षण आदि के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह पवार ने मतदान केन्द्रों में सुरक्षा व्यवस्था तथा फोर्स डिप्लॉयमेंट के संबंध में जानकारी दी।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा नोडल अधिकारी मतदाता जागरूकता अभियान तन्मय वशिष्ठ शर्मा ने लोकसभा आम निर्वाचन 2024 में मतदाता जागरूकता गतिविधि के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम तथा स्वीप गतिविधियों के आगामी कार्यक्रमों के संबंध में अवगत कराया।

नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा सम्पन्न, सभी 10 अभ्यर्थियों के नाम निर्देशन पत्र विधिमान्य पाए गए

अनूपपुर। लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार 12 शहडोल (अ.ज.जा.) लोकसभा निर्वाचन के लिए नाम निर्देशन पत्र 20 मार्च से 27 मार्च तक दाखिल किए गए। 28 मार्च को अभ्यर्थियों द्वारा जमा किए गए नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी तथा रिटर्निंग ऑफीसर आशीष वशिष्ठ के द्वारा अभ्यार्थियों व उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति में की गई। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा के पश्चात् 12 शहडोल (अ.ज.जा.) लोकसभा निर्वाचन के लिए दाखिल सभी 10 अभ्यर्थियों के नाम निर्देशन पत्र विधिमान्य पाए गए। नाम निर्देशन पत्र वापस लिए जाने की अंतिम तिथि 30 मार्च 2024 को अपरान्ह 3 बजे तक निर्धारित है। इसके पश्चात् अभ्यर्थियों को प्रतीक चिन्हों का आवंटन किया जाएगा। मतदान 19 अप्रैल 2024 को होगा तथा मतगणना की तिथि 04 जून 2024 निर्धारित है।

सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर होगी कार्रवाई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही आदर्श आचरण संहिता लागू हो गई है। संपूर्ण निर्वाचन कार्यक्रम के दौरान राजनैतिक दलों, सभी शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आम नागरिकों से आदर्श आचरण संहिता का पालन सुनिश्चित किए जाने की अपेक्षा की है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित अस्थाना ने कहा है कि विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर किसी भी प्रकार से आपत्तिजनक पोस्ट न करें, चित्रों, ऑडियो, वीडियो को तोड़-मरोड़कर पोस्ट न करें, जिससे सामाजिक, धार्मिक या व्यक्तिगत विद्वेष उत्पन्न होने की आशंका है। ऐसा किए जाने पर कार्रवाई की जाएगी। बिना अनुमति के रैली, जुलूस, सभा, प्रदर्शन अथवा वाहनों के माध्यम से प्रचार न करें। आदर्श आचरण संहिता का पालन सुनिश्चित करें। लोकसभा क्षेत्रों की पर्याप्त, निगरानी किये जाने एवं अवांछनीय गतिविधियों पर पैनी नजर रखने निगरानी दलों का गठन किया गया है।

शेमारू उमंग का चर्चित शो 'किस्मत की लकीरो से' होगा अब अपने नए प्राइम टाइम पर रात 8:30 बजे प्रसारित

शेमारू उमंग का लोकप्रिय शो 'किस्मत की लकीरों से' अब रात 8:30 बजे अपने नए प्राइम टाइम पर प्रसारित होगा। ऐसे में दर्शक अब नए समय पर श्रद्धा की यात्रा का गवाह बन सकते हैं और उनके जीवन में आने वाले नए उतार-चढ़ाव का हिस्सा बन सकते हैं।

शो में श्रद्धा का किरदार निभाने वाली शैली प्रिया अपने आगामी ट्रैक के बारे में बात करते हुए कहती हैं, 'श्रद्धा के किरदार में, मैं शो में कई सारे इमोशंस को एक साथ अपने अभिनय के जरिए प्रदर्शित कर रही हूँ। हम श्रद्धा की यात्रा को बहुत आगे तक ले आएं हैं और उसे दर्शकों ने अपना पूरा प्यार और समर्थन दिया है। रात 8:30 बजे के नए प्राइम टाइम स्लॉट के साथ, हमारा लक्ष्य अपने दर्शकों को अधिक मनोरंजन और ड्रामा प्रदान करना जारी रखना है। इसका आगामी एपिसोड दर्शकों के लिए उतार-चढ़ाव भरा होने वाला है और मुझे उम्मीद है कि वे इसे पसंद करेंगे।'

पिछले एपिसोड में, श्रद्धा और अभय को अलग करने के लिए, रोशनी सभी को विश्वास दिलाती है कि श्रद्धा एक देवी है। आखिरकार, श्रद्धा उसे अपनी ही दवा का स्वाद चखाकर सबक सिखाने का फैसला करतीं हैं। वह घोषणा करेगी कि वह समाधि ले रही है और अपनी शक्तियां रोशनी को हस्तांतरित कर देंगी और अब से वह देवी होंगी। ऐसे में अपनी ही योजना में फंसकर, क्या रोशनी यह कबूल करेंगी कि श्रद्धा के जीवन में आने वाली सभी चुनौतियां और परेशानियों का कारण वे खुद हैं ?

अब यह शो रात 8:30 बजे के नए प्राइम टाइम स्लॉट में प्रसारित होने के साथ, अपने डबल हाईवोल्टेज ड्रामा, मनोरंजक कहानी और उतार-चढ़ाव के साथ दर्शकों को अपनी सीटों से बांधे रखेगा।

'किस्मत की लकीरो से' शो के नए एपिसोड को देखना न भूलें, एक नए समय पर जो है रात 8-30 बजे, हर सोमवार से शनिवार, केवल शेमारू उमंग पर प्रसारित होगा।

दिल्ली में जुटे गैरसरकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं ने कहा अक्षय तृतीया पर देश में नहीं होने देंगे एक भी बाल विवाह

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

नईदिल्ली। अक्षय तृतीया और शादी ब्याह के मौसम को देखते हुए बाल विवाह मुक्त भारत अभियान से जुड़े विभिन्न गैरसरकारी संगठनों के सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ता राजधानी नई दिल्ली में जुटे और इस दौरान होने वाले बाल विवाहों को रोकने की रणनीति पर चर्चा की। सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए इस क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन 'वी फॉर हर फाउंडेशन' और 'जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन' के सहयोग से इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन फंड ने किया। शादी ब्याह के मौसमको देखते हुए बाल विवाह को रोकने के लिए जमीनी स्तर पर गांव-देहातमें काम कर रहे सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए यह काफी महत्वपूर्ण समय है, क्योंकि इस दौरान देश में हजारों की संख्या में बच्चों को बाल विवाह के नर्क में झोंक दिया जाता है। खास तौर से राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में अक्षय तृतीया का त्योहार बाल विवाह की दृष्टि से काफी संवेदनशील है। बाल विवाह मुक्त भारत अभियान देश भर के 161 गैरसरकारी संगठनों का गठबंधन है जो 2030 तक देश में बाल विवाह के खात्मे के लिए जरूरी 'टिपिंग प्वाइंट' यानी वह मुकाम जहां से बाल विवाह अपने आप खत्म होने लगेगा, को हासिल करने के लिए जमीनी अभियान चला रहे हैं।

इस तरह की कार्यशालाओं की अहमियत को रेखांकित करते हुए प्रख्यात बाल अधिकार कार्यकर्ता एवं लेखक भुवन ऋभु ने कहा, भारत 2030 तकबाल विवाह की रोकथाम के लिए संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को हासिल करने की ओर अग्रसर है। देश में बाल विवाह कीऊंची दर वाले इलाकों में पिछले एक वर्ष में गैरसरकारी संगठनों और सरकारों के प्रयासों ने जो गति पकड़ी है, उसे मजबूती और विस्तार देने की आवश्यकता है।

कार्यशाला में मौजूद जिला मुरैना के गैरसरकारी संगठन सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट के निदेशक उमेश वशिष्ठ ने कहा कि इसतरह की कार्यशालाएं बाल विवाह की रोकथाम के लिए जमीनी अभियान चला रहे कार्यकर्ताओं के सामने आ रही चुनौतियों का प्रभावी ढंग सेमुकाबला करने में सक्षम बनाने में सहायक होंगी। सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ता जमीनी स्तर पर बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता के प्रसार, लोगों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाने और बाल विवाह रोकनेकी दिशा में अनथक प्रयास कर रहे हैं।

अनुभवी अभिनेत्री डॉली मिन्हास ने सोनी सब के 'आंगन अपनों का' के सेट पर अदिति राठौर और आयुषी खुराना के साथ एक्टिंग करने के अनुभव साझा किए

सोनी सब का 'आंगन अपनों का', एक समर्पित सिंगल पिता जयदेव शर्मा (महेश ठाकुर) और उनकी तीन बेटियों- दीपिका (नीता शेट्टी), तन्वी (अदिति राठौर), और सबसे छोटी बेटी, पल्लवी (आयुषी खुराना) के प्रति उनके गहरे प्यार की दिल छू लेने वाली कहानी को दर्शाता है। इस दिल छू लेने वाले शो में महेश ठाकुर, कशिश दुग्गल (पल्लवी की सास) और डॉली मिन्हास (तन्वी की सास) जैसे अनुभवी कलाकार भी शामिल हैं।

व्यस्त शूटिंग के बीच, पल्लवी (आयुषी खुराना) और तन्वी (अदिति राठौर) इन अनुभवी कलाकारों के साथ बैठने और उनकी कहानियों और पिछले शोज़ की शूटिंग के अनुभवों को सुनने के लिए कुछ समय निकालती हैं। इस जोड़ी का अदिति की ऑनस्क्रीन सास रेखा (डॉली मिन्हास) के साथ एक अलग रिश्ता बन गया है, जो सालों के अपने शूटिंग अनुभवों की मज़ेदार और दिलचस्प कहानियां साझा करने के लिए जानी जाती हैं। जब सेट पर मौजूद लोग उनकी कहानियां सुनते हैं, तो सेट उत्साह से भर जाता है, जिससे हर दिन सीखने और जानने का नया अवसर बन जाता है।

तन्वी की भूमिका निभाने वाली अदिति राठौर कहती हैं, 'डॉली जी अपनी कहानियों से सेट पर सबका मनमोह लेती हैं! मैं उनकी बहुत बड़ी प्रशंसक हूं और हमेशा सुनने के लिए उत्सुक रहती हूं। एक बार उन्होंने अपने पुराने दिनों की एक रोमांचक घटना के बारे में बताया। वे एक नाइट शूट के लिए शूटिंग कर रही थी, और अचानक, एक तेंदुआ दिखाई दिया! डॉली जी सहित पूरी टीम डर गई थी, लेकिन उन्होंने शूटिंग बंद नहीं की। वे अपनी शूटिंग के कई और किस्से साझा करती हैं, और उन सभी को सुनकर काफी मज़ा आता है। उनकी कहानियां कैमरे से परे जादू बुनती हैं। उनके सफर की कहानियां सुनने में भी उतनी ही दिलचस्प हैं। वे सेट पर एक मज़ेदार और हल्का माहौल बनाती हैं, जिससे हम सभी उनकी कहानियों से बंधे रहते हैं।'

रेखा की भूमिका निभाने वाली डॉली मिन्हास कहती हैं, 'मुझे आंगन अपनों के सेट का माहौल बेहद पसंद है। यह सिर्फ काम के बारे में नहीं है; शूटिंग से परे भी, हम सेट पर भरपूर आनंद लेते हैं। यह देखना बहुत दिलचस्प है कि युवा पीढ़ी पुराने दिनों में शूटिंग के बारे में जानने के लिए कितनी उत्साहित और उत्सुक रहती हैं। खास तौर पर अदिति और आयुषी मेरे अभिनय के अनुभवों को सुनने के लिए मेरे साथ बैठती हैं और जानती हैं कि उन दिनों काम कैसे होता था, और जब भी मुझे सेट पर कुछ ऐसी ही घटनाएं दिखती हैं, जिससे मुझे अपने शुरुआती दिनों की याद आ जाती है, तो मैं उन्हें साझा करने से खुद को रोक नहीं पाती हूं। इसलिए, इस शो का सेट सभी को एक परिवार की तरह साथ लाता है, चाहे उनकी उम्र या अनुभव कुछ भी हो।'

आंगन अपनों का देखते रहें, हर सोमवार से शनिवार शाम 7:30 बजे, केवल सोनी सब पर

पृष्ठ एक का शेष

कार्यकर्ता नरेन्द्र मोदी की ताकत को...

और होलिका उन्हें गोद में लेकर के भस्म करना चाहती थी, लेकिन भक्त प्रहलाद में वह शक्ति थी की होली का तो जल गई और पहले डी श्रीराम का धुन करते हुए भक्तों के बीच निकल पड़े। उन्होंने कहा कि उमंग और उत्साह के साथ दो दिलों के एक-दूसरे के प्रति प्रेम देखने को मिलता है। आज कार्यकर्ताओं में बड़ा उत्साह जो दिखाई दे रहा है। यही ऊर्जा हमेशा बनी रहे।

नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनना ही हमारा लक्ष्य: लाल सिंह आर्य

भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंगर ने लहार में आयोजित होली मिलन समारोह में आए उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि की नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का हमारा एक ही लक्ष्य है हम यही आज होली की शुभकामनाओं के साथ संकल्प लेकर प्रत्येक बूथ के पर जाकर चुनावी प्रबंधन के साथ कार्यकर्ता एक जुट होकर चुनाव अभियान को सर्वव्यापी बनाए।

35 साल के धावो में मलहम बनकर करूंगा जनता की सेवा: अमरीश शर्मा गुड्डू

लहार विधानसभा क्षेत्र से विधायक अमरीश शर्मा गुड्डू ने होली मिलन कार्यक्रम के तहत कहा कि भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा अंतिम छोड़ तक के व्यक्ति की सेवा करना ही उनका लक्ष्य है जिस प्रकार आपने 2023 के विधानसभा चुनाव में भक्त पहलाद बनकर कांग्रेस की लंका को जलकर नष्ट किया था इस तरह मिशन 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताकत को मजबूत करने के लिए हमें प्रत्येक बूथ पर भक्त पहलाद की आवश्यकता है यह भाव हम सब कार्यकर्ता के मन में जागृत होना चाहिए और मैं विश्वास दिलाता हूं की लहार विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत के साथ कमल का फूल खिलेगा और हर समाज का आशीर्वाद नरेंद्र मोदी को मिलने जा रहा है।

विकास को आगे बढ़ाने के लिए मुझे आशीर्वाद प्रदान करें, चट्टान बनकर हमेशा खड़ी रहूंगी: संध्या राय

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं क्षेत्रीय सांसद पार्टी प्रत्याशी श्रीमती संध्या राय ने कहा की पार्टी के केंद्रीय प्रदेश नेतृत्व ने मुझ पर विश्वास जताते हुए दूसरी बार जन सेवा के लिए प्रत्याशी बनाकर भेजा है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह चुनाव नरेंद्र मोदी प्रत्येक बूथ पर चुनाव लड़ रहे हैं मैं तो मात्र माध्यम हूं केंद्र में तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के लिए आप 7 में को इस चुनावी महायुद्ध में भारतीय जनता पार्टी को संपर्क से समर्थन जनता के बीच मांग कर उन्हें ताकत और मजबूती प्रदान करें। उन्होंने कहा कि मैं हमेशा आपके बीच ही रहकर जहां भी विकास तय करेंगे मैं आपके कंधे से कंधा मिलाकर प्राथमिकता के आधार पर इस कार्य को आगे बढ़ाने में काम करूंगी। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी ने विकास का माध्यम सर्वप्रथम युवा महिलाएं किसान गरीब कल्याण के लिए कार्य किया है उन्होंने कहा की नारी शक्ति बिल अधिनियम लोकसभा में पास करते हुए महिलाओं को नेतृत्व दिया है आज इस बहन पर भी पार्टी ने विश्वास व्यक्त किया मैं भी आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस विश्वास में आपकी अहम भूमिका प्रत्येक बूथ केंद्र पर पार्टी को जिताने की हो ऐसा मुझे आशीर्वाद प्रदान करें।

इस अवसर पर भाजपा के संभागीय लोकसभा प्रभारी विजय दुबे, भिंड विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह, खनिज निगम के पूर्व अध्यक्ष कोक सिंह नरवरिया, रामकुमार महाते, रामप्रकाश तिवारी, दिनेश शुक्ला, हिर्देश सिंह राजावत, जिला पंचायत उपाध्यक्ष नन्दराम बघेल, संतोष बोहरे, नवल मिश्रा, रणविजय सिंह रिंकू, मण्डल अध्यक्ष सुभाष अग्निहोत्री, अंजनी कुरचानिया, केदार राजावत, विकास विरथरे, दीपक राजावत, विकास बोहरे, एड. मण्डल महामंत्री बाबूलाल टैगोर, संजीव चौधरी ठेकेदार, मीडिया प्रभारी योगेंद्र सिंह बघेल, रणवीर राठोर, संजीव चौधरी, रामकुमार राठोर, विनोद पखरिया, अमित तिवारी छोटू, अरफाज खान आदि सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

जीजा ने फूंकी साले की बाइक

ग्वालियर। राजीनामा नहीं करने पर जीजा ने साले की बाइक को पेट्रोल डालकर फूंक डाला। घटना जनकगंज थाना क्षेत्र के कमानी पुल स्थित पूरन बाबा का मंदिर के पास बीती रात की है। घटना का पता चलते ही साला और उसके परिजन के साथ ही आसपास के लोग आग बुझाने में जुटे और बाइक की आग बुझाकर पुलिस को सूचना दी। इसी बीच मौका पाकर जीजा फरार हो गया। पुलिस ने साले की शिकायत पर जीजा के खिलाफमामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

जनकगंज थाना क्षेत्र के कमानी पुल के नीचे पूरन बाबा मंदिर के पास रहने वाला अरूण सिंह पुत्र गिर्राज सिंह प्राइवेज जॉब करता है। बीती रात करीब साढ़े दस बजे वह कमरे में बैठा था कि तभी उसका बहनोई आया और पुराने विवाद पर हुई एफआईआर में राजीनामा करने के लिए धमकाने लगा। जब उसने अनसुना किया तो वह उससे गाली गलौज करने लगा और दरवाजे पर खड़ी उसकी बाइक केटीएम क्रमांक एमपी 07 एनएन 2860 में पेट्रोल डालकर आग लगा दी। जिस समय वह आग लगा रहा था उस समय कुछ युवक बाइक से कुछ दूरी पर खड़े हुए थे, अचानक आग लगते देखकर उन्होंने शोर मचाया और आग बुझाने में जुट गए। जिस जगह आरोपी ने बाइक में आग लगाई थी, वहां पर कुछ अन्य वाहन भी खड़े हुए थे और तुरंत ही युवकों द्वारा देखे जाने पर आरोपी भाग गया और तुरंत ही आग पर काबू पा लिया गया, जिससे अन्य वाहन आग की चपेट में आने से बच गए और बड़ा हादसा टल गया। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया है।

पीडित ने पुलिस को बताया कि छह माह पूर्व उसके बहनोई पंकज से उसका विवाद हुआ था और पंकज ने उसकी बेरहमी से मारपीट की थी, जिसकी शिकायत पुलिस से की थी। इस मामले में राजीनामा करने के लिए वह उसे लगातार धमका रहा था और वीडियो कॉल कर उसकी बहन की मारपीट कर रहा था। टीआई जनकगंज विपेन्द्र सिंह चौहान के अनुसार साले की बाइक में आग लगाने पर जीजा के खिलाफ मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश की जा रही है। आरोपी अभी फरार है और जल्द ही उसे पकड़ लिया जाएगा।

111वां अग्रवाल युवक युवती परिचय सम्मेलन अप्रैल में वृन्दावन में होगा

ग्वालियर। अखिल भारतीय अग्रवाल परिचय सम्मेलन में अगला आयोजन 111वां युवक युवती परिचय सम्मेलन वृन्दावन में आयोजित किया गया है। जिसके लिए अग्रबंधुओं की एक बैठक गुरूवार को गोवर्धन में आयोजित की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश ऐरन ने बताया कि कान्हा की नगरी वृन्दावन में होने वाले परिचय सम्मेलन के लिए अभी तक 320 युवक युवतियों के बायोडाटा हमे प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें अनेकों शहरों में सर्विस कर रहे विवाह योग्य युवक युवती के बायोडाटा भी है। गुड़गांव, नोएडा, पुणे में जाब कर रहे राहुल गुप्ता,

सनमय गुप्ता, नितीन गर्ग, हिमांशु गोयल ने विवाह के लिए पंजीयन कराया है। युवती गरिमा सिंगल सहारनपुर, उर्जा सुरेखा मुम्बई, पूजा अग्रवाल गुना, नीलम अग्रवाल फरीदाबाद, भूमिका जैन भरतपुर सृष्टि अग्रवाल मुरैना के अभिभावकों भी इस परिचय सम्मेलन में अपनी बेटी के लिए रिश्ता देखेंगे। ग्वालियर से भी अनेकों परिवार 5 अप्रैल को कार्यक्रम में शामिल होने के लिए वृन्दावन जायेंगे। इस अवसर पर अग्रवाल परिचय पत्रिका का विमोचन भी होंगा। गौवर्धन में आयोजित बैठक में तय किया गया कि वृन्दावन में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम के बाद शीघ्र गोवर्धन में भी सम्मेलन होगा। बैठक में मुकेश सिंघल, अनिल गर्ग, पूर्व चेयरमैन सत्यप्रकाश मित्तल, ओमप्रकाश अग्रवाल, डा जगदीश प्रसाद जैन, केके बृजवासी, सुमित ऐरन, कपिल अग्रवाल, पंकज मित्तल, कृष्ण गोपाल मित्तल, विवेक मित्तल, शैलेन्द्र मित्तल उपस्थित थे।

जिला चिकित्सालय मुरार से अनीता जॉन सेवानिवृत्त, विदाई समारोह हुआ

ग्वालियर। जिला चिकित्सालय मुरार ट्रोमा सेंटर की इंचार्ज अनीता जॉन नर्सिंग ऑफिसर से सेवानिवृत्त होने पर डॉ विपिन गोस्वामी ऑर्थोपेडिक सर्जन एवं ओटी स्टाफने शॉल एवं श्रीफल भेंट कर विदाई दी।

जिला चिकित्सालय मुरार में विगत कई वर्षों से सेवाएं दे रही अनीता जॉन नर्सिंग ऑफिसर से सेवानिवृत होने पर ट्रोमा ओटी में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा सेवानिवृत होने पर पुष्पमालाओं से बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस मौके पर सिविल सर्जन डॉक्टर आरके शर्मा, आरएमओ डॉक्टर आलोक पुरोहित, डॉक्टर विपिन गोस्वामी, सहायक प्रबंधक डॉ राजेश बिरथरिया, डॉक्टर सुनील शर्मा, डॉ अमित, रघुवंशी, डॉक्टर श्रद्धा गोस्वामी, डॉ हरेंद्र सिंह, मध्य प्रदेश स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री रणवीर सिंह सिकरवार, संभागीय अध्यक्ष महादेव सिंह गोयल, जिला अध्यक्ष महेंद्र जैन, जिला महामंत्री दिनेश गुप्ता, हरिमोहन शर्मा, कोमल सिंह, धर्मवीर शुक्ला, रविंद्र यादव, पुष्पेंद्र गोयल, संदीप प्रधान, प्रशांत सक्सैना, संजीव श्रीवास्तव, ज्योति शर्मा, दीपा राठौर सहित कई चिकित्सक एवं कर्मचारी मौजूद थे।

भाजपा का होली मिलन समारोह कल

ग्वालियर । भाजपा कार्यालय में गुरुवार को भाजपा के जिलाध्यक्ष अभय चौधरी की अध्यक्षता में लोकसभा की दृष्टि से एवं महानगर के होली मिलन समारोह के तहत जिला पदाधिकारियों की एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य कल 30 मार्च को भव्य रूप से होली मिलन समारोह का आयोजन किया जाना एवं ग्वालियर महानगर से लोकसभा प्रत्याशी को ज्यादा से ज्यादा मतों से विजयश्री दिलाना के लिए रहा।

भाजपा जिलाध्यक्ष अभय चौधरी ने बताया कि कल 30 मार्च को सायंकाल 4.30 बजे से मेला ग्राउंड स्थित राजबाग गार्डन में भाजपा का होली मिलन समारोह आयोजित किया जायेगा। होली मिलन समारोह का आयोजन बड़े ही भव्य तरीके से मनाए जाने के लिए जो भी तैयारियां रह गई है उसको जल्दी पूर्ण कर लिया जाएगा। चौधरी ने कहा कि होली मिलन समारोह में वरिष्ठ नेताओं सहित हजारों कार्यकर्ता शामिल होंगे। चौधरी ने कहा कि होली दिलों को जोड़ने वाला त्योहार है रंगो का त्योहार सभी के जीवन में उल्लास, उत्साह और नई ऊर्जा का संचार करता है। चौधरी ने कहा कि लोकसभा चुनाव भी अप्रैल से अपने पूरे शबाब पर आ जायेगा इस बार हमारी बड़ी भूमिका होनी चाहिए क्योंकि हमारे प्रत्याशी जो ग्रामीण क्षेत्र से हैं तो हमारी जबाबदारी बनती कि हम सब मिलकर उन्हें लाखों मतों से जिताकर भेजना है

उन्होंने कहा कि इसके लिए युवा मोर्चा को अलग से काम दिया जाएगा। युवा मोर्चा अपनी टीम तैयार करें, जो हर बार की तरह हर मतदान केंद्र पर पहुंचे, चुनाव को हम सबको मिलकर लड़ना है। शहर से डेढ़ लाख वोटों से जीतना कोई कठिन कार्य नहीं है। इस अवसर पर लोकसभा विस्तारक श्रवण व्यास, जिला महामंत्री विनोद शर्मा उपस्थित रहे। बैठक का संचालन विनय जैनएवं आभार राजू पलैया ने व्यक्त किया।

पुरानी रंजिश पर पथराव, दी धमकी

ग्वालियर। पुरानी रंजिश का बदला लेने आए तीन बदमाशों ने जमकर पथराव किया और बिल्डिंग के कांच तोड़ डाले। घटना गोला का मंदिर थाना क्षेत्र के नाना नगर की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची, तो आरोपी धमकी देकर भाग गए। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। गोला का मंदिर थाना क्षेत्र के नाना नगर निवासी पचास वर्षीय राधेश्याम शर्मा रामचरण शर्मा बीते रोज चाय पी रहे थे कि तभी केदार शर्मा, तनू शर्मा और विनीत शर्मा आए और पुराने विवाद पर गाली गलौज कर पथराव कर दिया। जिससे बिल्डिंग के कांच टूट गए। जब उन्होंने विरोध करने का प्रयास किया तो आरोपियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दे दी। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन इससे पहले ही आरोपी फरार हो गए। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफमामला दर्ज कर लिया है।

स्टार प्रचारकों के हैलीकॉप्टर उतारने के लिए चार दिन पूर्व करना होगा आवेदन

ग्वालियर । लोकसभा निर्वाचन-2024 के दौरान चुनाव प्रचार के लिए आने वाले विभिन्न दलों के स्टार प्रचारकों के हैलीकॉप्टर को ग्वालियर शहर में अधिग्रहित स्थान पर उतारने के लिए चार दिन पूर्व अपर जिला दण्डाधिकारी के कार्यालय में आवेदन देना होगा। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने इस संबंध में आदेश जारी किया है। ग्वालियर व्यापार मेला प्राधिकरण के खुले मैदान को हैलीपेड के लिये अधिग्रहीत किया गया है।

जिला दण्डाधिकारी श्रीमती चौहान ने आदेश में स्पष्ट किया है कि हैलीपेड पर हैलीकॉप्टर उतारने के लिए स्टार प्रचारक का नाम, आने का दिनांक, सभा स्थल एवं आने-जाने का समय सहित सम्पूर्ण कार्यक्रम संलग्न कर अपर जिला दण्डाधिकारी कार्यालय में चार दिवस के भीतर आवेदन प्रस्तुत करना होगा। साथ ही इसकी सूचना क्षेत्रीय पुलिस थाना को भी देनी होगी। अधिग्रहित स्थल पर अस्थायी हैलीपेड का निर्माण कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग द्वारा कराया जायेगा, जिसके लिये प्रत्याशी को 10 हजार रूपए शुल्क जमा करना होगा (प्रत्येक बार हैलीकॉप्टर उतारने की अनुमति पर) । यह खर्च प्रत्याशी के चुनावी खर्च में शामिल करना होगा। साथ ही स्थल पर आदर्श आचार संहिता का भी पालन सुनिश्चित करना होगा। यह अनुमति ÷पहले आओ-पहले पाओ÷ सिद्धांत के आधार पर सभा दिनांक से 48 घंटे पूर्व जारी की जायेगी।

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी ने लोकसभा निर्वाचन-2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के मकसद से लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा-160 के तहत हैलीपेड स्थल अधिग्रहित करने के आदेश जारी किए हैं। उन्होंने ग्वालियर शहर में ग्वालियर व्यापार मेला प्राधिकरण के खुले मैदान को हैलीपेड के लिये अधिग्रहित करने का आदेश जारी किया है। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र में भितरवार, डबरा, मोहना, बेहट व मुख्तियारपुरा में हैलीपेड बनवाए जायेंगे। ग्रामीण क्षेत्र में संबंधित एसडीएम कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत कर हैलीकॉप्टर उतरवाने की अनुमति प्राप्त की जा सकेगी।

आईपीएल पर सट्टा लगवाते एजेंट पकड़ा

ग्वालियर। आईपीएल में चल रहे मुम्बई इंडियंस और सनराइजर हैदराबाद के मैच पर सट्टा लगवा रहे एक कमीशन एजेंट को झांसी रोड थाना पुलिस ने महलगांव पुलिया के पास से पकड़ा है। पुलिस को पकड़े गए सटोरिए के मोबाइल में काफी हिसाब मिला है और पता चला है कि उसे कमीशन पर कुम्हरपुरा के दो सटोरियों ने लगाया था। पुलिस ने पकड़े गए आरोपी सहित दोनों सटोरियों के खिलाफमामला दर्ज कर लिया है।

झांसी रोड थाना प्रभारी हरेन्द्र शर्मा ने बताया कि सूचना मिली थी कि आईपीएम में चल रहे मुम्बई इंडियंस और सरराइजर हैदराबाद के मैच पर सट्टा लगवाया जा रहा है। इसका पता चलते ही एसआई अवधेश सिंह कुशवाह को पुलिस जवानों के साथ कार्रवाई के लिए पहुंचाया तो एक युवक महलगांव पुलिया के पास पुलिस को देखते ही भागने लगा। जिसका पुलिस ने पीछा किया और उसे दबोच लिया। उसकी तलाशी ली तो उसके पास से मोबाइल मिला, जिसमें एजेन्ट बेट गुरू डॉट कॉम साइट खुली हुई थी और आरोपी उस पर सट्टा ले रहा था। पकड़े गए सटोरिए को थाने लाकर उसके खिलाफप्रकरण दर्ज कर लिया। पकड़े गए सटोरिए से पूछताछ की तो पता चला कि पकड़ा गया सटोरिया तो एजेंट है और पूरा काम रामबरन परिहार और अनिल परिहार निवासी थाटीपुर का है और उन्होंने ही उसे लाइन दी है, जिस पर वह सट्टा लगवाता है।

पुलिस आरोपियों की तलाश में उनके घर थाटीपुर पहुंची, लेकिन इससे पहले ही आरोपी फरार हो गए। अब पुलिस की टीम फरार हुए सटोरियों की तलाश में दबिश दे रही है, क्योंकि उनके हाथ आने के बाद इस मामले में आगे और खुलासे होने की उम्मीद है। इससे पहले क्राइम ब्रांच की टीम ने बीती रात तीन सटोरियों को आईपीएल मैचों पर सट्टा लगवाते पकड़ा था और क्राइम ब्रांच की टीम उनसे पूछताछ करने में जुटी हुई है।

जय महावीर उपभोक्ता भण्डार द्वारा संचालित शासकीय उचित मूल्य की दुकान निलंबित

ग्वालियर । नियमित रूप से शासकीय उचित मूल्य की दुकान न खोलना जय महावीर उपभोक्ता भंडार के प्रबंधक को भारी पड़ा है। लक्ष्मण तलैया शिंदे की छावनी स्थित इस उचित मूल्य की दुकान को निलंबित कर दिया गया है। साथ ही यहाँ के उपभोक्ताओं को प्रियंका प्राथमिक उपभोक्ता भण्डार से संलग्न किया गया है, जिससे उन्हें नियमित रूप से राशन मिलता रहे। ज्ञात हो कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर खादय विभाग की टीम ने गत 20 मार्च को इस उचित मूल्य की दुकान (जय महावीर उपभोक्ता भण्डार) का औचक निरीक्षण किया था। जाँच दल को देखकर सेल्समेन सह प्रबंधक भाग खड़ा हुआ। टीम द्वारा विधिवत पंचनामा बनाकर दुकान के प्रबंधक के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कार्रवाई करने के लिए विधिवत कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा गया था। लेकिन संस्था द्वारा कोई जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया। इस कारण जिला आपूर्ति नियंत्रक द्वारा एक पक्षीय कार्रवाई कर इस दुकान को निलंबित कर दिया गया है। जिला प्रशासन को शिकायत प्राप्त हुई थी कि शासकीय उचित मूल्य की दुकान (जय महावीर उपभोक्ता भंडार) नियमित रूप से नहीं खुलती है। इस वजह से उपभोक्ताओं को राशन मिलने में कठिनाई आ रही है।

कलेक्टर ने माधव अंधाश्रम का किया निरीक्षण

ग्वालियर। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने बुधवार की देर शाम माधव अंधाश्रम पहुँचकर निरीक्षण किया और शिक्षाकों व विद्यार्थियों से चर्चा की। उन्होंने अंधाश्रम में रहने वाले बच्चों के लिये सभी व्यवस्थायें बेहतर से बेहतर करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट रखकर बच्चों को संगीत की शिक्षा देने के भी निर्देश दिए।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने माधव अंधाश्रम के प्राचार्य से भी चर्चा की और आश्रम की व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारियों से कहा है कि आश्रम में ओपन जिम भी रखी जाए, ताकि बच्चे शारीरिक व्यायाम

भी कर सकें। इसके साथ ही आश्रम के संबंध में विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने बच्चों को उपलब्ध कराने वाले भोजन के संबंध में भी जानकारी ली और निर्देश दिए कि पूर्ण गुणवत्ता के साथ बच्चों को भोजन उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इसके साथ ही आश्रम में जो छोटे-मोटे मरम्मत के कार्य हैं उसके लिये प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए।

युवक ने फांसी लगाकर दी जान, परिजनों ने लगाया पुलिस प्रताड़ना का आरोप

ग्वालियर। अवैध शराब के साथ पकड़े गए युवक ने घर आते ही फांसी लगाकर जान दे दी। घटना जनकगंज थाना क्षेत्र के नई सड़क पर बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मर्ग कायम कर लिया है। वहीं परिजनों ने आरोप लगाया है कि पुलिस की प्रताडना से तंग आकर मृतक ने जान दी है।

जनकगंज थान क्षेत्र के नई सड़क निवासी राजेश धौलपुरिया पुत्र किशोर धौलपुरिया ने बीती रात फांसी लगाकर जान दे दी। घटना का पता सुबह चला जब परिजन उसे जगाने पहुंचे तो वह फांसी के फंदे पर लटका हुआ था। उसे फंदे पर लटका देखकर पुलिस को सूचना दी और परिजनों का कहना था कि उसने बुरे काम छोड़ दिए थे और फिर भी पुलिस उसे आयेदिन परेशान कर रही थी। थाना प्रभारी जनकगंज विपेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि बीती रात राजेश धौलपुरिया को 18 क्वॉर्टर शराब के साथ पकड़ा था और उससे कुछ दिन पहले भी उसे शराब के साथ पकड़ा था। उसके खिलाफ पांच मामले जनकगंज थाने में दर्ज है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

शराब से भरी कार पकड़ी, 36 पेटी बरामद

ग्वालियर। अवैध शराब लेकर आ रहे तस्करों को जब पुलिस से

सामना हुआ तो बदमाश कार छोड़कर भाग निकले। हालांकि पुलिस ने करीब आधा घंटे तक पहाड़ी पर तस्करों का पीछा किया, लेकिन वह हाथ नहीं आए। पुलिस ने कार जब्त कर अज्ञात तस्करों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। कार में करीब सवा लाख रुपए से ज्यादा की 36 पेटी बरामद हुई है।

पुरानी छावनी थाना प्रभारी विनय सिंह तोमर ने बताया कि बीते रोज एसआई प्रदीप तोमर आरक्षक रवि कुशवाह, धनश्याम शर्मा, दया रावत, नेतराम के साथ मोतीझील पर चेकिंग कर रहे थे। इसी बीच एक दिल्ली पास कार क्रमांक डीएल 3सी बीए 9735 आती दिखाई दी, जिसे पुलिस ने रोकने का प्रयास किया तो कार सवार ने कार रोकने के स्थान पर गति देकर भगा ले गया। पुलिस संदेही कार के पीछे लगी तो कार सवार अपना वाहन छोड़कर पैदल ही पहाड़ी पर भाग निकले। तस्करों की तलाश में करीब आधा घंटे पुलिस ने पहाड़ी खंगाली लेकिन तस्कर हाथ नहीं आए। पुलिस ने जब कार की तलाशी ली तो उसमें करीब 36 पेटी शराब की बरामद हुई। पुलिस ने कार व शराब जब्त कर अज्ञात आरोपी के खिलाफमामला दर्ज कर लिया है।

रेत के अवैध उत्खनन में लिप्त दो पनडुब्बी जब्त

ग्वालियर। खनिज विभाग की टीम ने गुरूवार को भितरवार तहसील

के मोहनगढ़ में छापामार कार्रवाई कर रेत के अवैध उत्खनन में लिप्त दो पनडुब्बियाँ जब्त की हैं। जिला खनिज अधिकारी प्रदीप भूरिया ने बताया कि जब्त की गईं पनडुब्बियों को नष्ट करने की कार्रवाई की गई है। साथ ही रेत के अवैध उत्खनन में संलग्न व्यक्ति के खिलाफ खनिज अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। खनिज अधिकारी ने बताया कि अवैध उत्खनन कर्ता मौके से भाग गया था।

कांग्रेस के आधा सैकड़ा कार्यकर्ताओं ने ली भाजपा की सदस्यता

ग्वालियर। आराधना गार्डन में आयोजित हेमू कालानी मंडल के मंडल सम्मेलन में कांग्रेस के आधा सैकड़ा कार्यकर्ता बीजेपी में शामिल हो गए हैं। भाजपा जिलाध्यक्ष अभय चौधरी की मौजूदगी में कांग्रेस के आधा सैकड़ा कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। अभय चौधरी ने कांग्रेस के आधा सैकड़ा कार्यकर्ताओं को पार्टी का अंग वस्त्र पहनकर भाजपा की सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर सभापति मनोज तोमर, जिला मीडिया प्रभारी नवीन चौधरी, राकेश माहौर, पार्षद संजीव पोतनीस, पार्षद पति अजय तिवारी, महामंत्री विनोद शर्मा, विनय जैन, राजू पलैया, विधानसभा संयोजक विवेक जोशी, विधानसभा प्रभारी सुसेंद्र परिहार, जिला मंत्री धर्मेंद्र सिंह कुशवाहा, मंडल प्रभारी महेंद्र सोलंकी, मोहित जाट, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री ममता भिलवार, मंडल अध्यक्ष महेंद्र श्रीवास्तव, पूर्व जीडीए अध्यक्ष रविंद्र सिंह राजपूत, संतोष गोडयाले, विधि प्रकोष्ठ के जिला सहसंयोजक संजय सिंह कुशवाहा उपस्थित रहे।

आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड ने की स्कॉलरशिप की घोषणा

ग्वालियर। परीक्षण तैयारी सेवाओं में राष्ट्रीय अग्रणी आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड (एईएसएल) ने अप्रैल 2024 में शुरू होने वाले अपने नए सत्र की शुरुआत से पहले छात्रों को डॉक्टर और इंजीनियर बनने के सपने को साकार करने में सक्षम बनाने के लिए अलग-अलग स्कॉलरशिप की घोषणा की है। पहली छात्रवृत्ति इंस्टेंट एडमिशन कम स्कॉलरशिप टेस्ट (आईएसीएसटी) है, जो मेडिकल, इंजीनियरिंग और फाउंडेशन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए 90प्रतिशत तक छात्रवृत्ति प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, आकाश शहीदों के बच्चों, रक्षा कर्मियों और आतंकवाद प्रभावित व्यक्तियों को विशेष छूट प्रदान करेगा।

आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड के चीफ बिजनेस ऑफिसर अनूप अग्रवाल ने बताया कि हम भारत भर में छात्रों के लिए सुलभ और प्रभावशाली शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए समर्पित हैं। आईएसीएसटी और हमारे छात्रवृत्ति कार्यक्रमों जैसी पहल के माध्यम से, हमारा लक्ष्य योग्य छात्रों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने के लिए सशक्त बनाना है। हमें अपने बहादुर सशस्त्र बल कर्मियों के बच्चों की शिक्षा का समर्थन करने की अपनी परंपरा को जारी रखने पर गर्व है और हम शिक्षा में उत्कृष्टता और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इंस्टेंट एडमिशन कम स्कॉलरशिप टेस्ट छात्रों को तत्काल छात्रवृत्ति पुरस्कार और तत्काल प्रवेश के अवसर प्रदान करता है। छात्र ऑनलाइन परीक्षा दे सकते हैं और अपनी अर्जित छात्रवृत्ति का विवरण तुरंत प्राप्त कर सकते हैं, जिससे वे आकाश संकाय के विशेषज्ञ मार्गदर्शन के तहत तुरंत प्रवेश सुरक्षित कर सकेंगे। 60 मिनट तक चलने वाला ऑनलाइन आईएसीएसटी निर्धारित परीक्षा के दिनों में सुबह 10 बजे से रात 8 बजे के बीच लिया जा सकता है।

आठवीं से बारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए आईएसीएसटी चिकित्सा या इंजीनियरिंग में करियर के लिए अपनी क्षमता दिखाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। आईएसीएसटी

के माध्यम से प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियां मेडिकल, इंजीनियरिंग और फाउंडेशन कक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए लागू होती हैं। आईएसीएसटी आकाश कंप्यूटर-आधारित टेस्ट (सीबीटी) प्लेटफॉर्म के साथ-साथ आकाश वेबसाइट और एंड्रॉइड और ऐप्पल दोनों प्लेटफार्मों के लिए समर्पित मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से आयोजित किया जाता है। अपनी छात्रवृत्ति पहल के अलावा, एईएसएल रक्षा कर्मियों के बच्चों की शिक्षा का समर्थन करके सामाजिक जिम्मेदारी के लिए प्रतिबद्ध है। आकाश शहीदों के बच्चों को ट्यूशन फीस में 100प्रतिशत तक की छूट प्रदान करेगा। इसी प्रकार, रक्षा कर्मियों और आतंकवाद प्रभावित व्यक्तियों के बच्चों को उनके आईएसीएसटी स्कोर के अलावा 10प्रतिशत की अतिरिक्त छूट दी जाएगी। 2014 से अब तक इस पहल से 75,000 से अधिक छात्र लाभान्वित हुए हैं।

आकाश ने हाल ही में जेईई मेन्स 2024 सेशन 1 में अपनी सफलता का जश्न मनाया, जहां 41,263 छात्रों ने परीक्षा उत्तीर्ण की। उल्लेखनीय उपलब्धियों में 4,198 छात्रों ने 95 और उससे अधिक का प्रतिशत स्कोर प्राप्त किया, जबकि 939 छात्रों ने 99 और उससे अधिक का प्रतिशत स्कोर प्राप्त किया। हैदराबाद के ऋषि शेखर शुक्ला ने परफेक्ट 100 परसेंटाइल हासिल किया, करनाल के अभिराज सिंह, तिरुनेलवेली के श्री राम ए और हैदराबाद के विश्वनाथ के एस ने 99.99 का असाधारण परसेंटाइल हासिल किया। क्लासरूम कोर्स के छात्रों के अलावा, आकाश के डिजिटल कार्यक्रम के छात्रों ने जेईई मेन्स 2024 (सत्र-01) में जबरदस्त स्कोर किया, जिसमें रितम बनर्जी सहित टॉपर्स ने गणित में 100 के साथ 99.96 का प्रतिशत स्कोर प्राप्त किया, अरहा साहू ने रसायन विज्ञान में 100 के साथ 99.91 अंक प्राप्त किए, धृतिश्मान दत्ता 99.87 पर, हरीश कुमार 99.86 पर, रसायन विज्ञान में 100 प्रतिशत के साथ ईश्वरवंत 99.86 प्रतिशत पर, इशांत पटेल 99.85 प्रतिशत पर, सायन मंडल 99.82 पर, जेन जोन्स 99.78 पर, सृजन गुप्ता 99.74 दिलीपकुमार ए 99.70, रक्षित मोदी 99.67 सहित अन्य प्रभावशाली 26 छात्रों ने 99 प्रतिशत एनटीए स्कोर हासिल किया। इसके अलावा, जेईई (एड) 2023 में, आकाश बायजूस के डिजिटल प्रोग्राम के छात्र मयंक सोनी ने एआईआर-26 (ओबीसी श्रेणी रैंक 2) हासिल की है, जिससे साबित होता है कि सीखने का डिजिटल तरीका वास्तव में शीर्ष रैंक के साथ भारत की सबसे कठिन परीक्षाओं को क्रैक करने का एक शानदार समाधान है।

नीट यूजी परीक्षा 2023 में, आकाश के प्रभावशाली 1,06,870 छात्र उत्तीर्ण हुए, जिनमें से 17 राज्यध्केंद्र शासित प्रदेश के टॉपर्स के रूप में उभरे। उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वालों में कौस्तव बाउरी ने एआईआर 03, ध्रुव आडवाणी ने एआईआर 05, सूर्य सिद्धार्थ नागराजन ने एआईआर 06, स्वयं शक्ति त्रिपाठी ने एआईआर 08 और पार्थ खंडेलवाल ने एआईआर 10 हासिल किया।

छत्तीसगढ़ सरकार के खिलाफ चलाया पोस्टकार्ड अभियान

ग्वालियर। छत्तीसगढ़ सरकार के खिलाफपिंटो पार्क पर मुख्य पेंशनर्स एसोसिएशन ने सरनाम सिंह जादौन की अध्यक्षता में पोस्ट कार्ड अभियान चलाया। इस मौके पर मोहन सिंह कुशवाह, आरपी शर्मा, प्रीतम सिंह कुशवाह, राजाराम सिंह सेंगर,

पुरुषोत्तम ओझा, रामशंकर हरदेनिया, वासुदेव कौरव, राजेन्द्र सिंह कौरव, बीएन चतुर्वेदी, कालीचरण दीक्षित, दिनेश दीक्षित, मुन्नालाल दीक्षित, बृजेन्द्र सिंह राजावत, हवलदार सिंह भदौरिया, नंदकिशोर गोस्वामी, वीडी सविता, सीताराम जरसोनिया, जगमोहन गुप्ता, बलवीर सिंह परिहार, जनक सिंह नरवरिया, अरविंद चौहान, आशाराम शर्मा, तुलसीराम कुशवाह, उपेंद्र सिंह, अलवेल सिंह गुर्जर, सुल्तान सिंह, जोगेंद्र सिंह भदौरिया, कमल किशोर पाराशर, ध्रुव सिंह यादव, होतम सिंह गुर्जर, बनमाली बघेल, मुन्नीराम शर्मा, रोशनलाल धाकड, रामकिशोर राणा, प्रताप सिंह बिजपुरिया, तुलाराम माहौर, भागीरथ माहौर, विजयराम माहौर उपस्थित थे।

संपादकीय

यूट्यूब पर बढ़ रही अनावश्यक कंटेंट डालने की आदत

मोबाइल के रूप में लोगों को एक ऐसा उपकरण हाथ लग गया है, जिसके जरिए बहुत आसानी से वीडियो बनाए और संपादित कर प्रसारित किए जा सकते हैं। जबसे मोबाइल फोन संवाद से अधिक मनोरंजन का बड़ा उपकरण बनता गया और यूट्यूब जैसे मंचों पर हर किसी को अपनी रचनात्मक गतिविधियां परोसने की सुविधा प्राप्त हुई है, तबसे दुनिया भर में लाखों-लाख लोग बिना कुछ सोचे-समझे केवल शोहरत बटोरने या कुछ कमाई करने के लोभ में अनावश्यक सामग्री परोसने लगे हैं। हालांकि यूट्यूब जैसे मंचों ने लोगों को बिना कोई शुल्क लिए गीत-संगीत, नृत्य-नाट्य आदि की प्रस्तुतियां परोसने की सुविधा उपलब्ध कराई है, तो इसका यह अर्थ नहीं कि सामग्री को लेकर उनका कोई नियम-कायदा नहीं है। मगर बहुत सारे लोग उन नियम-कायदों का ध्यान नहीं रखते और अक्सर अश्लील मानी जाने या दूसरों को आहत करने, जानबूझ कर किसी को अपमानित करने वाली सामग्री डालते रहते हैं। हालांकि नियम-कायदों के उल्लंघन पर यूट्यूब का तंत्र खुद ऐसी सामग्री की छंटाई कर देता है, फिर भी लोग बाज नहीं आते। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यूट्यूब ने दिसंबर के बाद के तीन महीनों में दुनिया भर में नब्बे लाख ऐसे वीडियो हटाए, जो उसके नियम-कायदों का उल्लंघन करते थे। उनमें सबसे अधिक भारत से परोसे गए वीडियो थे। ऐसे वीडियो की संख्या बाईस लाख से ऊपर थी।

दरअसल, मोबाइल के रूप में लोगों को एक ऐसा उपकरण हाथ लग गया है, जिसके जरिए बहुत आसानी से वीडियो बनाए और संपादित कर प्रसारित किए जा सकते हैं। अनेक अध्ययनों से जाहिर हो चुका है कि भारत बड़ी आबादी वाला देश होने और तेजी से इंटरनेट उपभोक्ताओं की बढ़ती संख्या के चलते मनोरंजन के नाम पर न केवल आपत्तिजनक और अविवेकपूर्ण सामग्री का उत्पादन बढ़ा है, बल्कि उनके उपभोक्ता भी बढ़ रहे हैं। मगर कोई भी स्वस्थ समाज और जिम्मेदार तंत्र न तो आपत्तिजनक सामग्री के प्रसार की इजाजत दे सकता है और न उसके निर्माण को प्रोत्साहन। मगर असल जिम्मेदारी तो यूट्यूब जैसे मंचों का उपयोग करने वाले उपभोक्ता की बनती है कि वे सामग्री निर्माण में विवेक का उपयोग करना सीखें। जब तक इस जिम्मेदारी का बोध पैदा नहीं होता, यूट्यूब जैसे मंच संचालित करने वालों से सतर्कता की अपेक्षा बनी रहेगी।

नजरिया: हरित क्रांति में हिंसा की फसलें, भारी सामाजिक-आर्थिक विषमता थी प्रमुख वजह

हरित क्रांति में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की, पर इसकी कथित सफलता के पीछे छिपी वास्तविक कहानी भयावह है। सुप्रतिष्ठित पर्यावरण कार्यकर्ता और विद्वान डॉ वंदना शिवा ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक द वायलेंस ऑफ द ग्रीन रेवोल्यूशन (हरित क्रांति की हिंसा) में हरित क्रांति से उत्पन्न व्यापक पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों के बीच की जटिलताओं को खोजा है। उन्होंने हरित क्रांति पद्धति में छिपी बहुआयामी हिंसा की पड़ताल अनेक घटनाओं का उदाहरण देते हुए की है। इस पुस्तक में उन्होंने पारिस्थितिक सिद्धांतों से जोड़ कर वर्तमान और भविष्य में हरित क्रांति से उबलते एक-एक पहलू की भविष्यवाणी कर दी थी। हरित क्रांति का प्रादुर्भाव 20वीं शताब्दी के मध्य महत्वाकांक्षी कृषि परिवर्तनों के साथ हुआ था।

हरित क्रांति के साथ जो %नया% पंजाब बनता गया, उसमें भारी सामाजिक-आर्थिक विषमता थी। जब समाज में सामाजिक-आर्थिक असमानताएं एक सीमा से अधिक बढ़ जाती हैं, तब हिंसा भी सिर उठाने लगती है। 1980 के दशक में पंजाब में जिस हिंसा ने उग्र रूप ले लिया था, उसके कल्ले हरित क्रांति से ही फूटे थे। भारत में किसानों का विरोध प्रदर्शन एक आम घटना-सी बन गया है। ये विरोध प्रदर्शन हिंसा की छिटपुट घटनाओं से चिह्नित हैं। हरित क्रांति में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की, पर इसकी कथित सफलता के पीछे छिपी वास्तविक कहानी भयावह है। सुप्रतिष्ठित पर्यावरण कार्यकर्ता और विद्वान डॉ वंदना शिवा ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक द वायलेंस ऑफ द ग्रीन रेवोल्यूशन (हरित क्रांति की हिंसा) में हरित क्रांति से उत्पन्न व्यापक पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों के बीच की जटिलताओं को खोजा है। उन्होंने हरित क्रांति पद्धति में छिपी बहुआयामी हिंसा की पड़ताल अनेक घटनाओं का उदाहरण देते हुए की है। इस पुस्तक में उन्होंने पारिस्थितिक सिद्धांतों से जोड़ कर वर्तमान और भविष्य में हरित क्रांति से उबलते एक-एक पहलू की भविष्यवाणी कर दी थी। हरित क्रांति का प्रादुर्भाव 20वीं शताब्दी के मध्य महत्वाकांक्षी कृषि परिवर्तनों के साथ हुआ था। इसका उद्देश्य उच्च उपज वाली फसल किस्मों और कृषि रसायनों को अपनाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाना और वैश्विक भूख को कम करना था, परंतु इसके परिणाम सकारात्मक नहीं थे। उस समय भविष्य में इसके क्या-क्या सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और पारिस्थितिक परिणाम होंगे, इसका आकलन नहीं किया गया। हमने अपनी भौगोलिक सीमाओं में जन्मे तथा सदियों से पीढ़ियों को पोषित करते आए बीजों को तिलांजलि दे दी और अंधाधुंध पानी एवं अनेक जहरीले रसायनों के बल पर अधिक उत्पादन देने वाले बीजों को अपनाते चले गए। गहन रासायनिक कृषि पद्धतियों से उत्पन्न पारिस्थितिक विघटन, जिसमें मिट्टी का कटाव, भूजल की कमी और पर्यावरण जैसे मुद्दे शामिल हैं, ने पंजाब के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित किया। बड़े कृषि व्यवसायों में धन और शक्ति का संकेंद्रण, छोटे किसानों का बड़े स्तर पर विस्थापन और ग्रामीण ऋणग्रस्तता में वृद्धि आदि हरित क्रांति के विनाशकारी प्रभाव हैं। गहन कृषि क्रियाओं को निर्बाध चलाना पंजाब के बड़े किसानों की क्षमता से बाहर हो गया, तो उन्हें देश के अन्य राज्यों से बड़े पैमाने पर मजदूरों को बुलाना पड़ा। बिहार, मध्य प्रदेश और पूर्वी उत्तर प्रदेश से अधिकांश मजदूर जाकर पंजाब के खेतों में काम करने लगे। उनमें से कई कृषि मजदूर और उनके परिवारों ने पंजाब में ही बसना शुरू कर दिया, जिससे पंजाब की सामाजिक-संस्कृति संरचना पर भी प्रभाव पड़ने लगा। हरित क्रांति के साथ जो %नया% पंजाब (बड़े किसानों और मजदूरों के साथ) बनता गया, उसमें भारी सामाजिक-आर्थिक विषमता थी। जब समाज में सामाजिक-आर्थिक असमानताएं एक सीमा से अधिक बढ़ जाती हैं, तब हिंसा भी सिर उठाने लगती है। बीती सदी के 1980 के दशक में पंजाब में जिस हिंसा ने उग्र रूप ले लिया था, उसके कल्ले हरित क्रांति से ही फूटे थे। इसका सबसे अधिक कहर पंजाब के किसानों और कृषि मजदूरों पर ही टूटा था। बेशक हरित क्रांति ने खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता पैदा की और देश को खाद्य-निर्यातक राष्ट्र की श्रेणी में ला खड़ा किया। लेकिन इस प्रणाली से जुड़े पर्यावरणीय, पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्रदूषण की अनदेखी नहीं की जा सकती। भूजल की अत्यधिक कमी, मिट्टी पर रेगिस्तानीकरण का साया, जैव विविधता का अकूत ह्रास और सामुदायिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव हरित क्रांति के ऐसे दुष्परिणाम हैं, जिनकी काली छाया भविष्य पर मंडराती रहेगी। वायुमंडल में कुल उत्सर्जित ग्रीनहाउस गैसों का लगभग एक-तिहाई हिस्सा केवल कृषि क्षेत्र की देन है, और वह भी हरित क्रांति वाली कृषि की। इस तरह कृषि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन को बढ़ाने वाला मानवीय कार्यकलाप है। इस खेती को संभालने और परिवार की आजीविका के लिए उससे उत्पादन लेते रहने के लिए सभी आदानों (बीज, रासायनिक उर्वरक, रोगनाशक, कीटनाशक, और खरपतवार नाशक रसायन, ट्रैक्टर, कंबाइन, हार्वेस्टर और अन्य उपकरणों, आदि) के लिए बाजार पर बढ़ती निर्भरता ने किसानों को ऐसे चक्रव्यूह में फंसा दिया है, जिससे अनेक किसान आत्महत्या करके ही बाहर निकल पाते हैं। मानव समाज को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाली हिंसा के और भी अनेक आयाम हैं। पारिस्थितिक प्रक्रियाओं का टूटना, पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और अनगिनत जीवों पर संकट भी हिंसा के द्योतक हैं, जो अंततोगत्वा सामाजिक हिंसा से जुड़ जाते हैं और ये सब हरित क्रांति की कोख से जन्मे हैं। वह भारतीय सभ्यता, जो कभी अपने वैभव-भरे अतीत में 500 तरह के पेड़-पौधों से अपना भोजन चुनती थी, अब हरित क्रांति काल की चंद फसलों से ही भोजन प्राप्त करने के लिए अभिशप्त है और अपनी ऊर्जा आवश्यकता का लगभग 60 प्रतिशत केवल तीन फसलों (गेहूं, चावल और मक्का) से प्राप्त करने के लिए बाध्य है। वर्तमान में जारी किसान प्रदर्शन से एक झकझोर देने वाला पहलू यह भी निकलकर आता है कि कृषि-विविधता के अनन्य देश के किसानों की सांसें दो दर्जन से भी कम फसलों पर अटकी हैं, जिनके लिए वे न्यूनतम समर्थन मूल्य मांग कर अपनी आजीविका बचाने का जतन कर रहे हैं। हरित क्रांति के बीजों ने भूजल का भारी दोहन किया है, मिट्टी, जल और वायु को कलुषित कर जन स्वास्थ्य के साथ अन्य सभी थलचरों और जलचरों के स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित किया है। और सबसे बड़ी बात, पश्चिम से आयातित इस खेती के चलते खाद्य सुरक्षा और किसानों की संप्रभुता से समझौता किया गया है। हरित क्रांति ने किसानों को कर्ज की गुलामी और निराशा की विषैली धुंध में धकेल दिया है। खाद्य सुरक्षा और खाद्य प्रभुसत्ता क्षणिक चिंता के नहीं, बल्कि स्थायी चिंतन के विषय हैं। खाद्य सुरक्षा और संप्रभुता का मूल पृथ्वी की अनूठी विशेषताओं और पारंपरिक पारिस्थितिक कृषि पद्धतियों में निहित है। उत्पादकता केवल उन्नत बीजों पर निर्भर नहीं हो सकती, बल्कि यह पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है, जो मिट्टी की गुणवत्ता, जैव विविधता और कृषि की पारिस्थितिक अखंडता पर निर्भर करता है।

(लेखक जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एमेरिटस हैं।)

धैर्य जीवन के लक्ष्य का खोल देता है द्वार, धैर्य के अतिरिक्त उस द्वार की कोई और कुंजी नहीं

धैर्य वाला इंसान, आत्मविश्वास की नाव पर सवार होकर मुसीबत की हर नदी को सफलता से पार कर सकता है। यह एक अर्जित गुण और अंतरात्मा की औषधि है, जो अंधकार को देर-सबेर हटाकर रौशन करने में मदद करता है। धीर-गंभीर कभी उबाल नहीं खाते। पढ़ें राजेंद्र प्रसाद के विचार। अमूमन जिंदगी में धीरज और सब्र एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। जब कोई बेचैन या अधीर हो तो सबसे पहले उसका धीरज जवाब देता है और ऐसी में सब्र का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। उदाहरण के तौर पर माली प्रतिदिन पौधों में पानी देता है, मगर फल सिर्फ मौसम में ही आता है। इसीलिए जीवन में धैर्य की भूमिका बढ़ जाती है। बीज अपने समय पर ही फलेगा। आमतौर पर जिंदगी में किसी न किसी मोड़ पर न्यूनाधिक उथल-पुथल मचना स्वाभाविक है। ऐसे में अगर व्यक्तित्व कमजोर है तो अपने आप को नियंत्रण में रखना असंभव नहीं तो मुश्किल है। किसी अनजानी उलझन में बहुत से लोगों में सुलझने की समझ नहीं मिलती, क्योंकि हमने जीवन-दर्शन को इस हद तक पुष्पित-पल्लवित नहीं किया है, जिसके अभाव में अचानक आए संकटों से जूझने में दिक्कत होती है। किसी गुरुकुल में गुरुदेव शिष्यों को बाण चलाना सिखा रहे थे। एक अति-उत्साही शिष्य ने धनुष को इतनी जोर से खींचा कि उसके दो टुकड़े हो गए। गुरुदेव ने शिष्य को ज्ञान दिया कि अधीरता से योग्यता का अपव्यय हो जाता है। लक्ष्य भेदने के लिए जितनी ऊर्जा की जरूरत है, उससे अधिक या कम ऊर्जा के प्रयोग से लक्ष्य साधना कठिन है। हमारा जीवन धनुष की तरह है। अगर धैर्यपूर्वक ऊर्जा को धीरे-धीरे संचित करने के बाद नियंत्रण के साथ इसे खर्च करने की विधि सीख ली जाए तो लक्ष्य कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, उसे भेदना असंभव नहीं है। धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता है, क्योंकि धैर्य के अतिरिक्त उस द्वार की कोई और कुंजी नहीं है। जिन पेड़ों ने पतझड़ सहे हैं, बसंत उन्हीं पर आता है। संकट के समय धैर्य धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है। अति-उत्साह या असंयम कार्यफल को सही से फलित नहीं होने देता। जैसे चाक पर चढ़े कच्चे घड़े को अगर समय से पहले उतार लिया जाए तो उसका आकार विकृत हो जाता है। हम परिवर्तन के फल की जल्दबाजी में धैर्य खो बैठते हैं और शीघ्र फल आकांक्षा की हड़बड़ी से ऐसे निर्णय ले बैठते हैं, जिनसे भविष्य बिगड़ सकता है। जिस तरह दो पत्थरों के आपस में रगड़ने से उनका खुरदरापन मिट जाता है, उसी तरह धीरज के साथ काम करते रहने से कार्य भी सहज हो जाते हैं। बदलते दौर में ऐसे बीज डालने की परंपरा अब खत्म-सी हो रही है, जहां सही रास्ता सीखना, सिखाना, बताना और अपनाना दूभर हो रहा है। लोग आपाधापी में इतने मगन हो जाते हैं कि किसी निष्कर्ष की चिंता किए बगैर अपना संतुलन खोने के लिए हर समय तैयार बैठे हैं।

हल्का-सा झोंका भी बड़ी चुनौती या संतुलन को तहस-नहस करने जैसा दिखता है। सौभाग्य से हम इंसान हैं, लेकिन प्राकृतिक रूप से उम्र में बड़े जरूर होते जाते हैं, लेकिन हकीकत में बहुत-कुछ अच्छा या वजनदार सबक सीख नहीं पाते। इससे हमारे व्यक्तित्व विकास में धीरज और सब्र-संतोष का योगदान न के बराबर होता है। इससे व्यावहारिकता, सच्चाई, प्रतीक्षा की आदत, दूसरे की कद्र, विपरीत विचारधारा की स्वीकार्यता आदि की कमी से परिवार, भाईचारा, आस-पड़ोस, समाज, देश-प्रदेश में किसी छोटे-से प्रतिकूल झटके में ही उथल-पुथल से स्थिति असहज हो जाती है, जिससे कोहराम मचना स्वाभाविक है। यह तभी होता है, जब हमारे अंदर धीरज की भट्ठी नहीं सुलगती। जिंदगी सड़क सरीखी है, जो कभी सीधी नहीं होती। हमारे अंदर नकारात्मक या सकारात्मक ऊर्जा रहती है। उसके निखार के लिए संस्कार, परिवार का माहौल, शिक्षा का परिवेश, समाज में मौजूद प्रचलन आदि की गुणवत्ता मशाल का काम करती है। दिक्कत यह है कि मौजूदा शिक्षा ने नौकरी को औजार और जरूरतों ने पैसे को महत्त्वपूर्ण बना दिया है, जो हमारे जीवन पर राज करते मालूम होते हैं। इससे बहुत सारी चाही-अनचाही वजहें पैदा हो रही हैं। उपयोग और गुणवत्ता में सब मौन-से दिखते हैं, जिससे हम शिक्षित जरूर हो रहे हैं, लेकिन काबिलियत धूल चाट रही होती है।

पति-पत्नी में आक्रोश, संतान और बड़ों से खटपट, कुटुंब-कबीले में मन-मुटाव, समाज में गिरावट, गली-मोहल्ले में सामंजस्य का अभाव, विभिन्न धर्मावलंबियों में असहजता आदि धीरज के बिना बढ़ रहे हैं।

युवाशक्ति ऊर्जा का भंडार है और जल्दबाजी में फल को झटकने की लालसा रखती है। ऐसे में ऊर्जा सदुपयोग खतरे में पड़ जाता है। समय आने पर ही कार्य फलित होता है। कभी-कभी प्रगति प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष भी होती है। धैर्य वाला इंसान, आत्मविश्वास की नाव पर सवार होकर मुसीबत की हर नदी को सफलता से पार कर सकता है। यह एक अर्जित गुण और अंतरात्मा की औषधि है, जो अंधकार को देर-सबेर हटाकर रौशन करने में मदद करता है। धीर-गंभीर कभी उबाल नहीं खाते। इससे मानसिक ताकत मिलती है। कठिन परिस्थितियों से डरने के बजाय धैर्य से उसका सामना करने की जरूरत है।

हमेशा दिमाग का इस्तेमाल करते हुए समाधान करना चाहिए, क्योंकि बुद्धि बहुत बलवान होती है। अगर धैर्य-गुण हमारे पास है, तब सभी गुणों का भंडार हाथ में है। पक्षी भी जानते हैं कि आकाश में बैठने की जगह नहीं होती। धीर व्यक्तियों का स्वभाव है कि वे आपदा के समय और भी अधिक दृढ़ हो जाते हैं। सब्र की एक बात बहुत अच्छी है कि जब ये आ जाता है तो किसी चीज की तलब नहीं रहती। कबीर ने ठीक ही कहा है कि 'कबीरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय। टूक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय।'

मुद्दा: कलात्मकता की आड़ में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता, निगरानी के साथ सख्ती जरूरी

ओटीटी प्लेटफॉर्म के द्वारा इरॉटिक कंटेंट के नाम पर लगातार अश्लील सामग्री परोसी जा रही है, जिसमें गालियां एवं हिंसा की भी भरमार होती है, जिसका हमारे समाज पर बहुत ही नकारात्मक असर पड़ता है। मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करने के बजाय पोर्न और इरॉटिक के बीच के बारीक से फर्क को मिटाकर कलात्मकता के नाम पर सिर्फ नग्नता और अश्लीलता को ओटीटी प्लेटफॉर्म के माध्यम से परोसा जा रहा है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सजे इस अश्लीलता के बाजार पर सख्त अंकुश लगाने की जरूरत है। वर्ष 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने भी ओटीटी पर दिखाई जाने वाली सामग्री को लेकर सख्त टिप्पणी की थी। संसद में भी ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिंसक, अश्लील एवं विवादास्पद सामग्री परोसे जाने का मामला कई बार उठा।

जब से टेलीविजन शो की जगह वेब सीरीज ने ले ली, ओटीटी प्लेटफॉर्म का बोलबाला बढ़ गया है। कोरोना महामारी के समय से ओटीटी प्लेटफॉर्म की मांग बहुत बढ़ गई। लेकिन ओटीटी प्लेटफॉर्म हमारे समाज को निरंतर दूषित करने में लगे हुए हैं। कलात्मक स्वतंत्रता और मनोरंजन के नाम पर ओटीटी प्लेटफॉर्म पर धड़ल्ले से अश्लील, हिंसक, विवादास्पद सामग्री परोसी जा रही है, जो कहीं न कहीं हमारे समाज की नैतिकता और मूल्यों को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। ओटीटी प्लेटफॉर्म के द्वारा इरॉटिक कंटेंट के नाम पर लगातार अश्लील सामग्री परोसी जा रही है, जिसमें गालियां एवं हिंसा की भी भरमार होती है, जिसका हमारे समाज पर बहुत ही नकारात्मक असर पड़ता है। मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करने के बजाय पोर्न और इरॉटिक के बीच के बारीक से फर्क को मिटाकर कलात्मकता के नाम पर सिर्फ नग्नता और अश्लीलता को ओटीटी प्लेटफॉर्म के माध्यम से परोसा जा रहा है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सजे इस अश्लीलता के बाजार पर सख्त अंकुश लगाने की जरूरत है। वर्ष 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने भी ओटीटी पर दिखाई जाने वाली सामग्री को लेकर सख्त टिप्पणी की थी। संसद में भी ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिंसक, अश्लील एवं विवादास्पद सामग्री परोसे जाने का मामला कई बार उठा। इन सब विवादों के चलते कई बार सरकार से यह मांग की गई कि ओटीटी पर दिखाई जाने वाली सामग्री के संदर्भ में विनियमन नीति लागू की जानी चाहिए। सरकार ने ओटीटी पर दिखाई जाने वाली सामग्री को लेकर दिशा-निर्देश भी जारी किया है। केंद्र सरकार के दिशा-निर्देश में स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि ओटीटी पर गैर-कानूनी सामग्री दिखाने की अनुमति नहीं होगी। हालांकि सरकार ने प्री सेंसरशिप का रास्ता अपनाने के बजाय ओटीटी प्लेटफॉर्म को स्वनियमन अपनाने के लिए कहा है। लेकिन स्वनियमन कैसे हो और इसका दायरा क्या होगा, इसके बारे में सरकार ने स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी कर दिया है। सरकार ने साफ कर दिया है कि कोई भी ओटीटी प्लेटफॉर्म देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता को आघात पहुंचाने वाले दृश्य और संवाद नहीं दिखाएंगे। लेकिन इन दिशा-निर्देशों के बावजूद जब अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री परोसे जाने का सिलसिला नहीं रुका, तो मोदी सरकार ने अहम कदम उठाते हुए 18 ओटीटी प्लेटफॉर्म पर बैन लगा दिया, जो निश्चित रूप से स्वागत योग्य कदम है। द ग्लोबल स्टैटिक्स डॉट कॉम की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 45 करोड़ ओटीटी सब्सक्राइबर्स हैं। ओटीटी कंटेंट में अश्लीलता, नग्नता और नशीले पदार्थों को इस हद तक ग्लैमराइज किया जाता है कि बच्चे भी इसके मोहजाल से खुद को रोक नहीं पाते हैं। देखा जाए, तो ओटीटी प्लेटफॉर्म पर प्रसारित होने वाली 10 में से आठ वेब-सीरीज या शो ऐसे होते हैं, जिन्हें परिवार के साथ नहीं देखा जा सकता। यहां तक कि छात्र एवं शिक्षक तक के रिश्तों को भी अश्लील एवं असभ्य तरीके से दिखाया जाता है। यही नहीं, पारिवारिक रिश्तों की नींव भी कार्यक्रमों में प्रदर्शित अश्लील दृश्यों के माध्यम से नष्ट करने की साजिश चल रही है। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, 2016 से 2020 के दौरान भारत में ओटीटी पर अश्लील सामग्री 1,200 प्रतिशत से ज्यादा तेजी से बढ़ी है, जो बालमन से लेकर बड़े-बुजुर्गों तक को प्रभावित कर रही है। ऐसे में सरकार द्वारा ओटीटी प्लेटफॉर्म को इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी ऐक्ट के तहत सेक्शन 67 और 67 (ए) के भारतीय दंड संहिता के सेक्शन 292 और महिलाओं के अश्लील प्रतिनिधित्व (निषेध) अधिनियम, 1986 की धारा 4 का उल्लंघन करने के आरोप में प्रतिबंधित किया गया है। निश्चित रूप से तकनीक के विकास ने हमारे जीवन को सुविधा संपन्न बनाया है, लेकिन इसी तकनीकी की मदद से बच्चों की मासूमियत छीनी जा रही है। बच्चे समय से पहले ही बड़े हो रहे हैं। यही नहीं, अब इसने मानवीय मूल्यों से भी खेलना शुरू कर दिया है, जो एक सभ्य समाज के लिए दुखद और त्रासदीपूर्ण है। इन्हीं हिंसक, अश्लील सामग्रियों की वजह से किशोर उम्र के बच्चे कमजोर और दूषित मानसिकता के शिकार हो रहे हैं। उनके भीतर अपराधिक प्रवृत्ति जन्म ले रही है। संतोष की बात है कि अब सरकार ने कुछ हद तक ही सही, लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर निगरानी रखनी शुरू कर दी है। लेकिन अब भी इस दिशा में सख्ती जरूरी है, ताकि मनोरंजन के नाम पर समाज में अश्लीलता फैलाने से रोका जा सके।

लोगों का विश्वास जीतने का अगला कदम

जल्दी ही वहां विधानसभा चुनाव कराने और कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी पूरी तरह पुलिस के हाथों में सौंप देने का वचन दोहराया है। सरकार का मानना है कि अब घाटी में आतंकवाद पर काफी हद तक काबू पाया जा चुका है। आतंकी संगठनों को वित्तपोषण करने वाले व्यक्तियों को सलाखों के पीछे डाला जा चुका, उनकी परिसंपत्तियां कुर्क की जा चुकी हैं और उनके बैंक खाते बंद कर दिए गए हैं। कई आतंकी संगठनों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद उनकी सक्रियता समाप्त हो गई है। अब वहां की पुलिस भी सुरक्षा-व्यवस्था संभालने के मामले में सक्षम हो चुकी है।

कानून-व्यवस्था राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र का विषय है। मगर अफस्पा के तहत सशस्त्र बलों की तैनाती की जाती है, तो उससे राज्य के अधिकारों का हनन भी होता है। यह जम्मू-कश्मीर के लिए बड़ी राहत की बात होगी, अगर केंद्र सरकार वहां से सशस्त्र बल अधिनियम यानी अफस्पा हटा कर नागरिक ठिकानों की सुरक्षा-व्यवस्था पुलिस को सौंप दे। केंद्रीय गृहमंत्री ने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया है। जल्दी ही वहां विधानसभा चुनाव कराने और कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी पूरी तरह पुलिस के हाथों में सौंप देने का वचन दोहराया है। सरकार का मानना है कि अब घाटी में आतंकवाद पर काफी हद तक काबू पाया जा चुका है। आतंकी संगठनों को वित्तपोषण करने वाले व्यक्तियों को सलाखों के पीछे डाला जा चुका, उनकी परिसंपत्तियां कुर्क की जा चुकी हैं और उनके बैंक खाते बंद कर दिए गए हैं। कई आतंकी संगठनों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद उनकी सक्रियता समाप्त हो गई है। अब वहां की पुलिस भी सुरक्षा-व्यवस्था संभालने के मामले में सक्षम हो चुकी है। हालांकि वहां से अफस्पा हटाने की मांग लंबे समय से की जाती रही है, मगर विशेष राज्य का दर्जा समाप्त होने के बाद जिस तरह वहां अलगाववादी ताकतें सक्रिय हो गई थीं, उसके मद्देनजर अधिक संख्या में सेना को उतारना और अफस्पा को लगाए रखना जरूरी हो गया था। अब वहां विधानसभा चुनाव की मांग भी जोर पकड़ रही है, ऐसे में जैसा कि केंद्र सरकार मानती है, वहां आतंकवाद कमजोर हुआ है, अफस्पा हटाने का फैसला एक बड़ा कदम साबित होगा। दरअसल, अफस्पा के तहत सशस्त्र बलों को शक के आधार पर किसी की भी गिरफ्तारी, बिना किसी मंजूरी के तलाशी और गोली तक चला देने के अधिकार मिले होते हैं। इससे घाटी में सेना पर ज्यादतियों के आरोप लगते रहे हैं। फर्जी मुठभेड़ों, बड़ी संख्या में नागरिकों के लापता होने, मानवाधिकारों के हनन और बेकसूर लोगों के मारे जाने की ढेरों शिकायतें दर्ज हैं। वैसे भी नागरिक ठिकानों पर सशस्त्र बलों की तैनाती जनतांत्रिक मूल्यों के लिहाज से अच्छी बात नहीं मानी जाती। कानून-व्यवस्था राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र का विषय है।

मगर अफस्पा के तहत सशस्त्र बलों की तैनाती की जाती है, तो उससे राज्य के अधिकारों का हनन भी होता है। हालांकि इस वक्त जम्मू-कश्मीर में कोई राज्य सरकार नहीं है, पर नागरिक अधिकारों के लिहाज से सशस्त्र बलों की तैनाती और उन्हें अफस्पा का अधिकार दिया जाना उचित नहीं माना जाता है। वैसे भी सेना को नागरिक क्षेत्रों की सुरक्षा का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। उन्हें कानून-व्यवस्था संबंधी मामलों की समझ भी नहीं होती। पुलिस को न केवल नागरिक सुरक्षा, बल्कि अनेक स्थानीय विवादों को निपटाने की भी जिम्मेदारी होती है, वह सशस्त्र बलों की मौजूदगी से बाधित होती है।

घाटी में सशस्त्र बलों की सघन मौजूदगी की वजह से स्थानीय नागरिकों में रोष देखा जाता रहा है। इससे सरकार की नागरिकों से दूरी भी बढ़ती है। अगर नागरिक ठिकानों से सेना को हटा दिया जाता है, तो सरकार की योजनाओं की पहुंच भी स्पष्ट नजर आएगी। स्वाभाविक है, इससे नागरिकों का सरकार पर भरोसा बनेगा। इस तरह विधानसभा चुनावों के बाद सरकारी गतिविधियों के लिए एक समतल जमीन बन सकेगी। इस वक्त जम्मू-कश्मीर में सबसे जरूरी है सरकार और नागरिकों के बीच विश्वास बहाली की। इसके बिना स्थानीय युवाओं में भटकाव को दूर करना और उन्हें आतंकी गतिविधियों से मोड़ कर मुख्यधारा में लाना कठिन ही बना रहेगा, क्योंकि अफस्पा के चलते वहां के लोगों के भीतर अनेक प्रकार की कड़वाहटें भरी हुई हैं।

अभिषेक शर्मा ने बताया 16 बॉल में फिफ्टी का राज बोले- ब्रायन लारा से बात करना फायदेमंद रहा

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद के लिए रिकॉर्ड 16 बॉल पर फिफ्टी बनाने वाले अभिषेक शर्मा ने अपनी बैटिंग स्ट्रैटजी का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि ब्रायन लारा से मैच से पहले बैटिंग पर बात करना फायदेमंद रहा। बैटिंग पार्टनर ट्रैविस हेड का भी बहुत सपोर्ट मिला।

अभिषेक की फिफ्टी के सहारे एसआरएच ने बुधवार को मुंबई इंडियंस के खिलाफ आईपीएल इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर बना दिया। टीम ने 20 ओवर में 277 रन बनाए। अभिषेक 63 रन बनाकर आउट हुए, इस प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला।

घरेलू सीजन से बहुत कॉन्फिडेंस मिलता है- अभिषेक

अभिषेक शर्मा ने मैच के बाद पोस्ट मैच कॉन्फ्रेंस में कहा, मैंने ये चीज पहले भी कही है कि घरेलू क्रिकेट खेलने से बहुत फायदा और कॉन्फिडेंस मिलता है। हेड के साथ बैटिंग के वक्त मैसेज सिम्पल था कि पिच पर जा कर खुद को एक्सप्रेस करना है। हेड ने कहा कि अगर गेंद पाले में दिखे तो शॉट खेल देना है, मैंने भी वही किया।

मैं अपने मौकों से खुश हूं, जरूरी नहीं कि ओपनिंग ही मिले, मुझे हर पोजिशन पर बैटिंग करना पसंद है। मैच से पहले मैंने ब्रायन लारा से भी चैटिंग की थी, उनसे बात करने से मुझे कॉन्फिडेंस मिला। मैं नेट्स में भी बैटिंग से ज्यादा अब बॉलिंग पर ध्यान देने लगा हूं, इससे मेरा फोकस सुधर रहा है।

अभिषेक ने कहा, %मेरी परफॉर्मेंस का राज यही है कि पैरेंट्स मेरा मैच देखने आए थे। उन्होंने बहुत समय से मेरा मैच नहीं देखा था, कल वे आए तो मैंने खुलकर बैटिंग की।

हेड की फास्टेस्ट फिफ्टी का रिकॉर्ड 22 मिनट में तोड़ा

बुधवार को अभिषेक शर्मा स्त्रा के लिए नंबर-3 पर बैटिंग करने उतरे। उनसे पहले ओपनिंग करने उतरे ट्रैविस हेड ने 18 बॉल पर हाफ सेंचुरी लगाई, जो स्त्रा के लिए सबसे तेज फिफ्टी थी। उनके फिफ्टी लगाने के 22 मिनट बाद ही अभिषेक शर्मा ने 16 गेंद पर फिफ्टी लगा दी। अभिषेक 23 बॉल में 63 रन बनाकर आउट हुए। इस पारी में 7 सिक्स और 3 चौके शामिल रहे। उनके आउट होने के वक्त टीम का स्कोर 11 ओवर में 161 रन था। यहां से आखिर के 9 ओवरों में टीम ने बगैर विकेट गंवाए 114 रन और बना लिए।

278 रन के टारगेट के सामने मुंबई ने भी ताबड़तोड़ बैटिंग की। टीम ने 246 रन बनाए और 31 रन से मुकाबला गंवा दिया। अभिषेक शर्मा को प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला।

मुश्ताक अली टूर्नामेंट में बनाए थे 485 रन

अभिषेक शर्मा का आईपीएल से पहले घरेलू क्रिकेट का सीजन भी शानदार रहा था। सैय्यद मुश्ताक अली टी-20 टूर्नामेंट में पंजाब के लिए खेलते हुए उन्होंने 48.50 की औसत से 485 रन बनाए। वह टूर्नामेंट के सेकेंड टॉप स्कोरर रहे, इनमें 2 सेंचुरी और 3 फिफ्टी शामिल रहीं।

विमेंस एशिया कप का शेड्यूल घोषित भारत-पाकिस्तान मैच 21 जुलाई को

नई दिल्ली। एशियन क्रिकेट काउंसिल ने विमेंस एशिया कप का शेड्यूल घोषित कर दिया है। टूर्नामेंट 19 से 28 जुलाई तक श्रीलंका के दम्बुला शहर में खेला जाएगा। भारत और पाकिस्तान एक ही ग्रुप में हैं और दोनों के बीच ब्लॉकबस्टर मुकाबला 21 जुलाई को होगा।

विमेंस एशिया कप के ठीक बाद सितंबर में विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप भी होना है। जिसका वेन्यू बांग्लादेश है। ऐसे में आईसीसी टूर्नामेंट से ठीक पहले एशियन टीमों के लिए एशिया कप ही तैयारी का आखिरी मौका रहेगा।

8 टीमों को 2 ग्रुप में बांटा

2022 में पिछला एशिया कप बांग्लादेश में खेला गया। इस दौरान 7 टीमों ने हिस्सा लिया और हर टीम ने एक-दूसरे के खिलाफ 6 मैच खेले। इस बार एक टीम बढ़ाकर टूर्नामेंट में 8 टीमें कर दी गईं। सबसे सफल टीम भारत के अलावा टूर्नामेंट में 2018 की चैंपियन बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया और यूएई भी हैं।

भारत-नेपाल के बीच होगा ओपनिंग मैच

19 जुलाई को टूर्नामेंट का ओपनिंग मैच भारत और नेपाल के बीच होगा। इसी दिन पाकिस्तान का सामना यूएई से होगा। चारों टीमें ग्रुप-ए में हैं। वहीं श्रीलंका, बांग्लादेश, मलेशिया और थाईलैंड ग्रुप-बी में हैं।

दोनों ग्रुप की 2-2 टॉप टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। दोनों नॉकआउट मुकाबले 26 जुलाई को होंगे, यहां जीतने वाली टीमों के बीच 28 जुलाई को फाइनल होगा।

वर्ल्ड कप में आखिरी बार भिड़ी थीं दोनों टीमें

भारत और पाकिस्तान के बीच विमेंस टी-20 फॉर्मेट में 14 मुकाबले खेले गए। 11 में भारत और महज 3 में पाकिस्तान को जीत मिली। दोनों के बीच आखिरी मुकाबला टी-20 वर्ल्ड कप दौरान फरवरी 2023 में केपटाउन के मैदान पर हुआ था, इसे भारत ने 7 विकेट से जीता। एशिया कप में दोनों के बीच आखिरी मैच 2022 में हुआ था, तब पाकिस्तान को 13 रन से जीत मिली थी।

भारत ने सबसे ज्यादा 7 बार विमेंस एशिया कप का खिताब जीता है।

द हंड्रेड के साथ चलेगा एशिया कप

इस बार का विमेंस एशिया कप द हंड्रेड विमेंस टूर्नामेंट के साथ होगा। इंग्लैंड का फ्रेंचाइजी लीग टूर्नामेंट 23 जुलाई से शुरू होना है, जिसमें टीम इंडिया की कप्तान हरमनप्रीत कौर, उप कप्तान स्मृति मंधाना और विकेटकीपर ऋचा घोष हिस्सा लेंगी। इनके अलावा श्रीलंका की कप्तान चमारी अटापट्टू भी टूर्नामेंट का हिस्सा हैं। चारों प्लेयर्स एशिया कप खत्म होने के बाद द हंड्रेड खेलने जाएंगी।

एसीसी ने विमेंस एशिया कप की शुरुआत 2004 में की। तब से 8 बार टूर्नामेंट खेला गया। 7 बार भारत और एक बार बांग्लादेश ने खिताब जीता। 2008 तक 4 बार टूर्नामेंट वनडे फॉर्मेट में खेला गया, हर बार भारत ने ट्रॉफी जीती। 2012 में टी-20 विमेंस एशिया कप की शुरुआत हुई।

2012 के बाद 2016, 2018 और 2022 में 4 बार टूर्नामेंट खेला गया। 3 बार इंडिया विमेंस टीम चैंपियन बनी, वहीं 2018 में एक बार बांग्लादेश ने भारत को ही हराकर खिताब जीता। 2022 में भारत ने श्रीलंका को फाइनल में हराकर आखिरी बार ट्रॉफी जीती थी।

आंध्र क्रिकेट एसोसिएशन ने विहारी को कारण बताओ नोटिस भेजा

नई दिल्ली। आंध्र क्रिकेट एसोसिएशन ने हनुमा विहारी को एक महीने के बाद कारण बताओ नोटिस दिया है। भारत के पूर्व बल्लेबाज ने एक महीने पहले उन्हें आंध्र के कप्तान के पद से हटाने के लिए एसोसिएशन में राजनीतिक हस्तक्षेप की बात कही थी। इसके बाद ही एसोसिएशन ने नोटिस भेजा है।

विहारी ने अभी तक उस नोटिस का जवाब नहीं दिया है, जो कुछ दिन पहले,ष्ट की बैठक के बाद दिया गया था। एसीए के एक अधिकारी ने पीटीआई से कहा, हां, हमने उन्हें कारण बताओ नोटिस भेजा है और हम उनके जवाब का इंतजार कर रहे हैं। एसोसिएशन इस मुद्दे को लंबा नहीं खींचना चाहता।

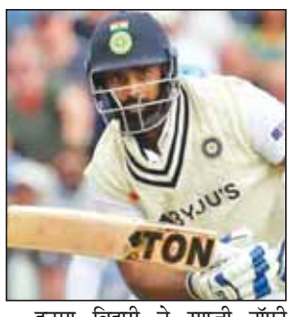

हनुमा विहारी ने रणजी ट्रॉफी 2023-24 सीजन के पहले मैच के बाद कप्तानी छोड़ दी थी। आंध्र को रणजी ट्रॉफी 2023-24 सीजन के क्वार्टर फाइनल में मध्य प्रदेश के खिलाफ 4 रन से हार का सामना करना पड़ा था। जिसके बाद विहारी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट किया था। इसमें उन्होंने एसोसिएशन के दबाव में कप्तानी छोड़ने की बात कही थी।

पहले मैच के बाद विहारी को कप्तानी से हटाया था

विहारी ने रणजी ट्रॉफी 2023-24 सीजन की शुरुआत आंध्र के कप्तान के रूप में की थी, लेकिन पिछले साल के रनरअप बंगाल के खिलाफ पहले मैच के बाद उन्होंने पद छोड़ दिया। रिकी भुई ने सत्र के बाकी मुकाबलों में टीम का नेतृत्व किया। विहारी ने उस समय कप्तानी छोड़ने के लिए, व्यक्तिगत कारणों को जिम्मेदार ठहराया था। लेकिन, बाद में दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने इंस्टाग्राम पोस्ट में कहा कि एसोसिएशन ने उन्हें इस्तीफा देने के लिए कहा था। विहारी ने कहा, मैं बंगाल के खिलाफ पहले मैच में मैं कप्तान था। उस मैच के दौरान मैं 17वें खिलाड़ी पर चिल्लाया और उसने अपने पिता (नेता) से शिकायत की, बदले में उसके पिता ने एसोसिएशन से मेरे खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कहा। उन्होंने कहा, हमने पिछले साल फाइनल में जगह बनाने वाले बंगाल के खिलाफ 410 रन का पीछा किया था लेकिन मेरी बिना किसी गलती के कप्तानी से इस्तीफा देने के लिए कहा गया था। हनुमा विहारी ने भारत के लिए कुल 16 टेस्ट खेले हैं। उन्होंने 839 रन बनाए। इसमें उनका एक शतक वेस्टइंडीज के खिलाफ 2019 में निकला। सिडनी में उनकी 161 बॉल में 23 रन की नाबाद पारी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच जिताने में भी मदद की।

हार्दिक पांड्या की कप्तानी से झल्लाए पठान मुंबई इंडियंस के कप्तान को जमकर लगाई लताड़

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने हार्दिक पांड्या की कप्तानी पर जमकर भड़ास निकाली है। मुंबई इंडियंस की कप्तानी करते हुए हार्दिक पांड्या के फैसले इरफान पठान को बिलकुल रास नहीं आए। पूर्व ऑलराउंडर ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर सिलसिलेवार ट्वीट करके हार्दिक पांड्या की आलोचना की।

बता दें कि हैदराबाद में बुधवार को आईपीएल 2024 के आठवें मैच में सनराइजर्स हैदराबाद ने मुंबई इंडियंस को 31 रन से मात दी। यह मुकाबला रिकॉर्ड्स के नजरिये से ऐतिहासिक बन गया। सनराइजर्स हैदराबाद ने बुधवार को आईपीएल इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर खड़ा किया। ऑरेंज आर्मी ने अपने बैटर्स के तूफानी प्रदर्शन की बदौलत 20 ओवर में 3 विकेट खोकर 277 रन बनाए।

इरफान पठान हुए आगबबूला

मुंबई इंडियंस की फील्डिंग के समय हार्दिक पांड्या के गेंदबाजी बदलाव के फैसले से इरफान पठान नाखुश दिखे। उन्होंने ट्वीट किया, कम से कम यही कहा जा सकता है कि हार्दिक पांड्या की कप?तानी बेहद साधारण रही है। जब सामने वाली टीम आक्रमण कर रही है तब बुमराह को लंबे समय तक गेंदबाजी से दूर रखना मेरी समझ के बाहर है।

फिर बैटिंग पर फोड़ा गुस्सा

हैदराबाद द्वारा मिले 278 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी मुंबई इंडियंस के बल्लेबाजों ने भी तगड़ा पलटवार किया। हालांकि, बैटिंग में भी कमजोर कड़ी कोई साबित हुआ तो वो रहे कप्तान हार्दिक पांड्या। हार्दिक पांड्या 20 गेंदों में एक चौके और एक छक्के की मदद से 24 रन बना सके। वह जयदेव उनादकट की गेंद पर विकेटकीपर क्लासेन को कैच थमाकर पवेलियन लौट गए। इरफान पठान को हार्दिक पांड्या की बैटिंग पर भी गुस्सा आया, जिसे उन्होंने जाहिर करने से गुरेज नहीं किया। पठान ने एक और ट्वीट किया, अगर पूरी टीम 200 के स्ट्राइक रेट से खेल रही है तो कप्तान 120 के स्ट्राइक रेट के साथ बैटिंग नहीं कर सकता है।

व्यापार

सेंसेक्स में 1,000 अंक से ज्यादा की तेजी, निफ्टी भी 300 अंक से ज्यादा चढ़ा

नई दिल्ली। शेयर बाजार में आज यानी 28 मार्च को तेजी देखने को मिल रही है। सेंसेक्स 1,000 अंक से ज्यादा की बढ़त के साथ 74,050 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं, निफ्टी में भी 300 अंक से ज्यादा की तेजी है, ये 22,450 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। बैंकिंग, फार्मा और ढ्ढञ्ज शेयर्स में ज्यादा बढ़त है।

आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज की डीलिस्टिंग की मंजूरी के बाद आज इसके शेयरों में गिरावट दिखी। शुरुआती कारोबार में शेयर 4.47 प्रतिशत टूटकर 708.55 के इंट्राडे लो तक पहुंच गया। हालांकि, बाद में इसमें रिकवरी आई और अभी इसमें करीब 2 प्रतिशत की गिरावट है।

कंस्ट्रक्शन एंड डेवलपर्स कंपनी स्त्रारू कॉन्ट्रैक्टर्स लिमिटेड का आईपीओ यानी इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग पब्लिक सब्सक्रिप्शन के लिए 26 मार्च से ओपन हो गया है। रिटेल निवेशक इस आईपीओ के लिए 28 मार्च तक बोली लगा सकेंगे।

इस आईपीओ के लिए रिटेल निवेशक को मिनिमम एक लॉट यानी 70 शेयर के लिए अप्लाय करना होगा। कंपनी ने आईपीओ का प्राइज बैंड ?200-?210 प्रति शेयर तय किया है।

यदि आप आईपीओ के अपर प्राइज बैंड ?210 के हिसाब से 1 लॉट के लिए अप्लाय करते हैं तो आपको ?14,700 लगाने होंगे। रिटेल निवेशक अधिकतम 13 लॉट यानी 910 शेयर के लिए बिडिंग कर सकते हैं, जिसके लिए ?191,100 इन्वेस्ट करने होंगे।

इससे पहले कल यानी 27 मार्च को शेयर बाजार में तेजी देखने को मिली थी। सेंसेक्स 526 अंक की बढ़त के साथ 72,996 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं, निफ्टी में भी 118 अंक की तेजी देखने को मिली, ये 22,123 के स्तर पर बंद हुआ था।

सोना 66,971 पर पहुंचा, अब तक का सबसे महंगा, इसी महीने 4 हजार से ज्यादा बढ़ी कीमत

नई दिल्ली। सोना 28 मार्च को ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के मुताबिक, 10 ग्राम सोना 137 रुपए महंगा होकर 66,971 रुपए का हो गया है। इससे पहले इसी महीने 21 मार्च को सोने ने 66,968 रुपए प्रति 10 ग्राम का ऑल टाइम हाई बनाया था। चांदी में आज मामूली तेजी देखने को मिली है।

ये 14 रुपए महंगी होकर 74,011 रुपए प्रति किलो ग्राम पर पहुंच गई है। इससे पहले ये 73,997 रुपए पर थी। चांदी ने बीते साल, यानी 2023 में 4 दिसंबर को 77,073 का ऑल टाइम हाई बनाया था।

मार्च में अब तक 4 हजार रुपए से ज्यादा महंगा हुआ सोना

इस महीने यानी मार्च में सोने की कीमत में शानदार तेजी देखने को मिल रही है। 1 मार्च को सोना 62,592 रुपए प्रति ग्राम पर था जो 28 मार्च को 66,971 रुपए प्रति ग्राम पर पहुंच गया। यानी इस महीने अब तक इसकी कीमत में 4,379 रुपए की तेजी आई। वहीं चांदी भी 69,977 रुपए से बढ़कर 74,011 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

2023 में 8 हजार रुपए से ज्यादा महंगा हुआ था सोना

साल 2023 की शुरुआत में सोना 54,867 रुपए प्रति ग्राम पर था जो 31 दिसंबर को 63,246 रुपए प्रति ग्राम पर पहुंच गया था। यानी साल 2023 में इसकी कीमत में 8,379 रुपए (16त्न) की तेजी आई। वहीं चांदी भी 68,092 रुपए से बढ़कर 73,395 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

70 हजार तक जा सकता है सोना

मार्केट एक्सपर्ट्स के अनुसार, आने वाले दिनों में सोने में तेजी देखने को मिल सकती है। इसके चलते इस साल के आखिर तक सोना 70 हजार रुपए प्रति 10 ग्राम तक जा सकता है। वहीं चांदी भी 75 हजार प्रति किलोग्राम तक पहुंच सकती है।

सुनहरा है मोबाइल गेमिंग इंडस्ट्री का भविष्य, 2028 तक 6 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है रेवेन्यू

नई दिल्ली। इंटरएक्टिव एंटरटेनमेंट एंड इनोवेशन काउंसिल और ऑनलाइन गेमिंग फर्म विंजो ने भारतीय गेमिंग इंडस्ट्री को लेकर एक रिपोर्ट पेश किया है।

इस रिपोर्ट के अनुसार आने वाले सालों में भारतीय गेमिंग इंडस्ट्री के रेवेन्यू में तेजी देखने को मिली है।

विंजो की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय गेमिंग उद्योग का एनुअल रेवेन्यू वर्ष 2028 तक 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने की उम्मीद है। वहीं पिछले साल यानी वर्ष 2023 में भारतीय गेमिंग इंडस्ट्री का वार्षिक राजस्व 2023 में 3.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसका मतलब है कि वर्ष 2028 में गेमिंग इंडस्ट्री का रेवेन्यू दोगुना होने की उम्मीद है।

इंटरएक्टिव एंटरटेनमेंट एंड इनोवेशन काउंसिल की रिपोर्ट 2024 के विश्लेषण और सेकेंडरी डेटा के अनुसार वर्ष 2023 में गेमिंग यूजर 144 मिलियन थे जो वर्ष 2028 में 240 मिलियन तक पहुंचने का अनुमान है।

IEIC की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय गेमिंग उद्योग में 500 गेमिंग स्टूडियो सहित 1400 से अधिक गेमिंग कंपनियां शामिल हैं। गेमिंग का वार्षिक राजस्व 2028 तक 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

रिपोर्ट के अनुसार विभिन्न राज्य सरकार भी गेमिंग और ईस्पोर्ट्स को बढ़ाने के लिए कई पहल शुरू कर रही है। जहां वर्ष 2023 में प्रोफेशनल गेमर्स की संख्या 500 थी, उनकी संख्या आने वाले पांच वर्षों में 2.5 गुना बढ़ने की संभावना है।

रिपोर्ट के मुताबिक भारत में चार वर्षों में गेम डाउनलोड में तेजी देखने को मिली है। वर्ष 2019 में जहां 5.65 बिलियन गेम डाउनलोड होते थे उनकी संख्या वर्ष 2023 तक 9.5 बिलियन हो गई।

ग्लोबल मार्केट में गेम डाउनलोड में भारत की हिस्सेदारी 16 प्रतिशत तक बढ़ी है। इसके बाद ब्राजील में 7.6 प्रतिशत और अमेरिका 7.4 प्रतिशत की हिस्सेदारी है।

अडाणी फैमिली ने अंबुजा सीमेंट में 6,661 करोड़ निवेश किया

नई दिल्ली। बिलेनियर गौतम अडाणी के परिवार ने अंबुजा सीमेंट में 6,661 करोड़ रुपए निवेश किया है, जिससे सीमेंट बनाने वाली कंपनी में उनकी हिस्सेदारी 3.6त्न बढ़कर 66.7त्न हो गई है। अंबुजा सीमेंट ने एक्सचेंज फाइलिंग में इसके बारे में जानकारी दी है।

इससे पहले अक्टूबर 2022 में वारंट के माध्यम से अडाणी फैमिली ने अंबुजा सीमेंट्स में 5,000 करोड़ रुपए का निवेश किया था। अधिग्रहण के बाद कंपनी के प्रमोटरों ने अब तक अंबुजा में 11,661 करोड़ रुपए निवेश किए हैं।

कंपनी ने कहा कि इस निवेश से उसकी फाइनेंशियल सिचुएशन मजबूत होगी और हम डेवलपमेंट प्लान को आगे बढ़ाने के साथ इमर्जिंग अपॉर्चुनिटी का फायदा उठा सकेंगे। अडाणी ग्रुप ने जून 2022 में 10.5 बिलियन डॉलर में अंबुजा सीमेंट और एसीसी सीमेंट को खरीदा था।

अंबुजा सीमेंट के ष्टश्वह्र अजय कपूर ने कहा, हम अडाणी फैमिली के हिस्सेदारी बढ़ाने के फैसले की घोषणा करते हुए रोमांचित हैं। यह फंड अंबुजा को फास्ट-ट्रैक ग्रोथ के लिए कैपिटल फ्लेक्सिबिलिटी प्रोवाइड करता है।

यह न केवल हमारे विजन और बिजनेस मॉडल में दृढ़ विश्वास का प्रमाण है, बल्कि हमारे स्टेकहोल्डर्स को लॉग टर्म सस्टेनेबल वैल्यू क्रिएशन प्रोवाइड करने की हमारी प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है।

अंबुजा सीमेंट के शेयर में 2 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी

अंबुजा सीमेंट के शेयर में आज 2 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी देखने को मिल रही है। दोपहर 1 बजे कंपनी का शेयर 2.19त्न तेजी के साथ 614 रुपए के स्तर पर कारोबार कर रहा था। पिछले 6 महीनों में अंबुजा सीमेंट के शेयर में 46 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी देखने को मिली है।

वॉरंट एक तरह का फाइनेंशियल कॉन्ट्रेक्ट होता है। कंपनियां इसका इस्तेमाल फंड रेज करने के लिए करती है। ये निवेशकों को एक्सपायरेशन से पहले एक निश्चित कीमत पर उस कंपनी के निश्चित शेयर खरीदने या बेचने का अधिकार देता है।

भारतीय और अमेरिकी वॉरंट किसी भी समय एक्सपायरी डेट पर या उससे पहले एग्जीक्यूट किए जा सकते हैं, जबकि यूरोपीय वॉरंट केवल एक्सपायरी डेट पर ही एग्जीक्यूट हो सकते हैं। शेयर खरीदने का अधिकार देने वाले वॉरंट को कॉल वारंट कहा जाता है। वहीं, शेयर बेचने का अधिकार देने वालों को पुट वॉरंट के रूप में जाना जाता है।

निर्वाचन आयोग द्वारा आप सभी को जो दयित्व दिया गया है उसे निष्पक्षता के साथ पूरा करें : एसडीएम

पिछोर सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में अतिथि शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका, आशा कार्यकर्ता सहित कोटवारों का प्रशिक्षण हुआ सम्पन्न

शिवपुरी। शिवपुरी जिले के पिछोर अनुविभाग अंतर्गत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देश अनुसार लोकसभा निर्वाचन 2024 में विशेष पुलिस अधिकारी का प्रशिक्षण सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी तथा पिछोर अनुविभागीय दंडाधिकारी जेपी गुप्ता द्वारा पिछोर तथा खनियाधाना क्षेत्र के समस्त अतिथि शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता सहित कोटवारों को सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान पिछोर एसडीओपी प्रशान्त शर्मा, तहसीलदार शिव शंकर सिंह गुर्जर, प्रशिक्षण ट्रेनर सूबेदार अरुण प्रतापसिंह जादौन, सीडीपीओ अरविन्द तिवारी, बीइओ विनोद गुप्ता, प्रकाश सूर्यवंशी, बीआरसी सुरेश गुप्ता, संजय भदोरिया, निर्वाचन सुपरवाइजर हरिदास त्रिपाठी आदि उपस्थित थे।

प्रशिक्षण के दौरान शिवपुरी गुना संसदीय क्षेत्र सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी तथा पिछोर एसडीएम गुप्ता ने कहा गया कि आप लोगो को चुनाव निर्वाचन आयोग द्वारा जो महत्वपूर्ण जिम्मेदारी तथा दायित्व दिए गए हैं ,उन सभी को आप निष्पक्षता एवं ईमानदारी के साथ करें, यह एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है जो आप लोगों को दी जा रही है इसके तहत आपको विशेष पुलिस अधिकारी के रूप में कार्य करना है, आप लोग इस कार्य के माध्यम से निर्वाचन प्रक्रिया को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराए। आप लोगों को हर तरह से राजनैतिक गतिविधियों से दूरी बनाकर रहें। पुलिस के जो दायित्व है एवं आपको क्या क्या कार्य करना है इस संबंध आपको एक फिल्म के माध्यम से सम्पूर्ण जानकारी दी जा रही है । इसके साथ ही एसडीओपी प्रशांत शर्मा ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को पुलिस से संबंधित कार्यों की जानकारी देते हुऐ उनके द्वारा पूछे प्रश्नों के भी उत्तर दिए कार्यक्रम के दौरान सर्वप्रथम पुलिस अधिकारी के रूप में कार्य करने हेतु निर्वाचन आयोग द्वारा प्रस्तुत प्रक्रिया की फिल्म भी दिखाई गई, जिसमे विस्तार से सभी कर्तव्यों के बारे में समझाया गया। प्रशिक्षण में पुलिस की ओर से उपस्थित सूबेदार अरूण प्रताप सिंह जादौन ने सभी को पुलिस अधिकारी के कर्तव्य व अधिकारों के बारे में बताते हुए कहा कि आप लोगो को आदर्श आचार संहिता का पूर्णतः पालन भी करना होगा, और पुलिस की भांति कार्य भी करना होगा।प्रशिक्षण में पिछोर तहसीलदार शिवशंकर गुर्जर द्वारा उनके अधिकार क्षेत्र ओर बूथ पर किस तरह कार्य करना है आदि जानकारी साझा की गई। यह प्रशिक्षण दो पालियों में रखा गया था जिसमे 11 बजे से 1ः00 तक पिछोर तथा 2ः00 बजे से 4ः00 बजे तक खनियाधाना विकासखंड के अतिथि शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता, सहायिका एवं कोटबारों का रखा गया था।इस दौरान कुछ लोगों के द्वारा निर्वाचन से संबंधित प्रश्न रखे गए जिनके उत्तर सूबेदार जादौन द्वारा दिए गए।

बच्चों के सवोत्तम विकास में अहम भूमिका निभाये : प्रधान जिला न्यायाधीश

बाल कल्याण अधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

श्योपुर, माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण राकेश कुमार गुप्त की अध्यक्षता में किशोर न्याय अधिनियम, लैंगिक अपराधों से बालकों का सरंक्षण अधिनियम के प्रावधानों, नालसा की योजनाओं एवं बच्चों से संबंधित कानूनी विषय के बारे में प्रशिक्षित किये जाने हेतु बाल कल्याण अधिकारियों का 01 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जिला न्यायालय परिसर में स्थित ए.डी.आर. भवन, श्योपुर में किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ में माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष राकेश कुमार गुप्त के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष राकेश कुमार गुप्त द्वारा उद्बोधन दिया गया कि हम आशा करते है कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा आप बच्चों के सर्वोत्तम विकास में अहम भूमिका निभाएंगे व समाज में कानूनी जागरूकता के माध्यम से लोगों को लाभांवित करेंगे।

पवन कुमार बांदिल, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्योपुर द्वारा किशोर न्याय अधिनियम के अंतर्गत पूलिस की भूमिका के बारे में बताते हुये कहा कि विधि के उल्लघंन करने वाले बालक की गिरफ्तारी के

समय बालक को हवालात में नहीं रखा जायेगा, बल्कि संप्रेक्षण गृह अथवा सुरक्षित स्थान पर भेजा जायेगा तथा 24 घण्टे के भीतर किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किया जायेगा। साथ ही जंघन्य अपराधों में प्रांरभिक निर्धारण के समय किशोर न्याय बोर्ड अनुभवी मनोवेज्ञानिकों एवं मनोसामाजिक विशेषज्ञों की सहायता ले सकेगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्योपुर द्वारा ऐसे मनोचिकित्सकों की कमेटी गठित की गई है जो कि ऐसे विधि विरूद्ध बालकों की आवश्यकतानुसार काउंसिलिंग करती है।

श्रीमती शिखा शर्मा, जिला विधिक सहायता अधिकारी, श्योपुर द्वारा बच्चों के सर्वोत्तम विकास के प्रमुख सिद्धांत के बारे में बताया कि जब भी कोई कार्य करे उसमें बच्चों का सर्वोत्तम हित होना चाहिए, इसी के साथ ही सुने जाने का अधिकार, सहभागिता का अधिकार, गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकार के बारे में बताया कि जो व्यक्ति कमजोर होता है। हम उसके सम्मान के प्रति उतने जागरूक नहीं होते है जिसके चलते हम बालकों को कमजोर समझकर उनके उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते है जिससे बालकों का आत्मसम्मान बुरी तरह प्रभावित होता है इसलिये बच्चों से समन्वय करते समय हमेशा धैर्यपूर्वक रवैया अपनाना चाहिए। कोई भी बालक जन्म से अपराधी नहीं होता, माता-पिता व समाज के द्वारा बच्चों में की गई लापरवाही के फलस्वरूप बच्चे भटक जाते है ऐसी स्थिति में हम सभी का दायित्व है कि बच्चें टी.वी. व मोबाईल के माध्यम से क्या देख व सीख रहे है इस पर विशेष रूप से ध्यान रखा जावे।

इसी क्रम में लीगल एड डिफेंस श्योपुर के डिप्टी चीफ बाबू सिंह बर्मन द्वारा लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधान, मानव तस्करी एवं लीगल एड डिफेंस काउंसिल की भूमिका के बारे में भी विस्तार से बताया।

उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत खुला संवाद रखा गया जिसमें बाल कल्याण अधिकारियों द्वारा कार्य में आने वाली परेशानियों के संबंध में चाहे गये सुझावों का निराकरण किया गया।

उक्त कार्यक्रम में राकेश कुमार गुप्त, प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिविसेप्रा, पवन कुमार बांदिल, सचिव जिविसेप्रा, श्रीमती शिखा शर्मा, जिला विधिक सहायता अधिकारी, लीगल एड डिफेंस श्योपुर के डिप्टी चीफ बाबू सिंह बर्मन, पैरालीगल वालेंटियर हनुमान तिवारी, सी.डव्ल्यू.सी व बाल कल्याण पुलिस अधिकारीगण उपस्थित रहें।

सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर होगी कार्रवाई

श्योपुर, भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही आदर्श आचरण संहिता लागू हो गई है। संपूर्ण निर्वाचन कार्यक्रम के दौरान राजनैतिक दलों, सभी शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आम नागरिकों से आदर्श आचरण संहिता का पालन सुनिश्चित किए जाने की अपेक्षा की है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड ने कहा है कि विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर किसी भी प्रकार से आपत्तिजनक पोस्ट न करें, चित्रों, ऑडियो, वीडियो को तोड़-मरोड़कर पोस्ट न करें, जिससे सामाजिक, धार्मिक या व्यक्तिगत विद्वेष उत्पन्न होने की आशंका है। ऐसा किए जाने पर कार्रवाई की जाएगी। बिना अनुमति के रैली, जुलूस, सभा, प्रदर्शन अथवा वाहनों के माध्यम से प्रचार न करें। आदर्श आचरण संहिता का पालन सुनिश्चित करें। लोकसभा क्षेत्रों की पर्याप्त, निगरानी किये जाने एवं अवांछनीय गतिविधियों पर पैनी नजर रखने निगरानी दलों का गठन किया गया है।

शासकीय कर्मचारियों को करना होगा आदर्श आचरण संहिता का कड़ाई से पालन

श्योपुर, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी लोकेश कुमार जांगिड ने चुनावी प्रक्रिया के दौरान शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आदर्श आचरण संहिता का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिये हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा है कि चुनाव के दौरान शासकीय सेवकों को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचरण संहिता में दिये गये निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा तथा अपने आचरण एवं व्यवहार में पूर्ण निष्पक्षता बरतनी होगी। शासकीय कर्मचारियों को चुनाव में न केवल निष्पक्ष रहना चाहिये, बल्कि जनता को उनकी निष्पक्षता का विश्वास भी होना चाहिए। उन्हें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे ऐसी शंका हो कि वे किसी दल या उम्मीदवार की मदद कर रहे हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि शासकीय कर्मचारी किसी भी प्रकार चुनाव प्रचार या अभियान में भाग नहीं ले सकेंगे, जिससे उनकी अधिकारिता या पद का लाभ कोई दल या उम्मीदवार न ले सकें। आदेश के अनुसार निर्वाचन में किसी अभ्यर्थी के लिए कार्य करना मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के प्रावधानों के विपरीत होगा। इसी प्रकार लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 129 एवं 134(क) के अनुसार निर्वाचनो से संलग्न अधिकारी, कर्मचारी न तो किसी अभ्यर्थी के लिए कार्य करेगा और न मत दिए जाने में कोई असर डालेगा। कोई भी शासकीय सेवक निर्वाचन अभिकर्ता, मतदान अभिकर्ता या गणना अभिकर्ता के रूप में कार्य नहीं कर सकेगा। उन्होंने कहा कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 28(क) के अधीन नियमों के संचालन के लिए सुनियोजित समस्त अधिकारी, कर्मचारी तथा राज्य सरकार द्वारा पदाभिहित पुलिस अधिकारी निर्वाचन के परिणाम घोषित होने तक निर्वाचन आयोग में प्रतिनियुक्ति पर माने जायेंगे तथा निर्वाचन आयोग के नियंत्रण और अनुशासन के अधीन रहेंगे। निर्वाचन की प्रक्रिया के दौरान पदीय कर्त्तव्यों की अवहेलना करने वाले शासकीय सेवकों के विरुद्ध मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों के तहत कठोर कार्यवाही की जायेगी।

अभ्यर्थी सहित 5 व्यक्ति ही आरओ कक्ष में कर सकेंगे प्रवेश

श्योपुर, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया है कि नामांकन भरने पहुंचे अभ्यर्थी के साथ 4 व्यक्ति ही रिटर्निंग अधिकारी के कक्ष में प्रवेश कर सकेंगे। 100 मीटर के अंदर केवल तीन वाहनों को ही प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। नामांकन भरने की प्रक्रिया सुबह 11 बजे से शुरू होगी और दोपहर 3 बजे तक चलेगी। 3 बजे के उपरांत कक्ष में किसी भी व्यक्ति को प्रवेश करने अथवा दस्तावेज लाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। अभ्यर्थियों को सभी सुसंगत एवं आवश्यक दस्तावेज जैसे नामांकन फार्म जमानत राशि का प्रमाण, प्रारूप-ए एवं बी, शपथ पत्र आदि के साथ आरओ कक्ष में आना होगा। यदि अभ्यर्थी उसी निर्वाचन क्षेत्र का निर्वाचक नहीं है, जहां से वह चुनाव लड़ रहा है तो अभ्यर्थी को संबंधित निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचक नामावली की प्रति या निर्वाचक नामावली से संबंधित भाग की प्रमाणित प्रति दाखिल करनी होगी। एक अभ्यर्थी एक ही निर्वाचन क्षेत्र के लिए 4 नामांकन पत्र दाखिल कर सकता है। इनको एक साथ या पृथक से जमा किया जा सकता है। नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्रॉफी भी कराई जाएगी।

इस शनिवार,'मैडनेस मचाएंगे - इंडिया को हंसाएंगे' पर एक मजेदार गैग पेश करेगी कुशल बद्रीके और केतन सिंह की जोड़ी

इस शनिवार, अपनी सीट बेल्ट बांध लें, क्योंकि सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न का कॉमेडी शो, 'मैडनेस मचाएंगे - इंडिया को हंसाएंगे' आपको हंसी के सफर पर ले जाने के लिए बिल्कुल तैयार है! 'मैडनेस की मालकिन' हुमा कुरैशी के साथ शो में शामिल होंगी बॉलीवुड की सदाबहार एक्ट्रेस भाग्यश्री।

कॉमेडियन कुशल बद्रीके और केतन सिंह मंच के मालिक होंगे, क्योंकि वे 'मजदूर गैग' नामक एक मजेदार गैग के लिए जोड़ी बनाएंगे, जहां वे एक दिहाड़ी मजदूर के संघर्ष के बारे में बताते हैं, जो अपने कार्यस्थल पर कुछ छिपे हुए खजाने की खोज करते हैं और मनमाने ढंग से तय करते हैं कि उन पर कौन दावा करेगा! कॉमिक टाइमिंग इतनी लाजवाब थी कि सेट पर मौजूद हर कोई अपनी हंसी नहीं रोक सका! एक्ट और तैयारियों के बारे में विस्तार से बताते हुए, कुशाल बद्रीके कहते हैं, 'केतन सिंह के साथ काम करना एक अद्भुत अनुभव है! वे सिर्फ एक शानदार कॉमेडियन ही नहीं हैं, बल्कि उनके साथ बिताया गया हर पल एक आकर्षक अनुभव है। एक्ट करते समय, केतन अपने काम में सहज थे। उनकी कॉमिक टाइमिंग ने मुझे खुद से जोड़ दिया। साथ में, अद्भुत कॉमेडी टाइमिंग के साथ, हम उन मुद्दों पर विचार करते हैं, जो कामकाजी वर्ग के लोग अनुभव करते हैं और हंसी के बीच छिपे हुए खजाने को प्रकट करते हैं। भाग्यश्री जी के सामने परफॉर्म करना एक संपूर्ण आनंद था, और खास बात यह है कि उन्होंने हमारे एक्ट की तारीफ की। मुझे उस पल का इंतजार है जब दर्शक इस शो को देखेंगे।'

देखिए 'मैडनेस मचाएंगे - इंडिया को हंसाएंगे', इस शनिवार रात 9:30 बजे, सिर्फ सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न पर।

बेंजामिन गिलानी के बेटे राहिल गिलानी क्रू में तब्बू के भाई के रूप में मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं

अभिनेता राहिल गिलानी एक बार फिर दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए उत्साहित हैं क्योंकि उनकी फिल्म क्रू रिलीज के करीब है। प्रतिभाशाली युवा अभिनेता, जो रिया कपूर निर्देशित फिल्म में तब्बू के छोटे भाई की भूमिका निभाएंगे, फिल्म में अपनी भूमिका के लिए दर्शकों की प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे हैं।

डकैती कॉमेडी में करीना कपूर खान, तब्बू और कृति सेनन मुख्य भूमिका में हैं। फिल्म में दिलजीत दोसांझ और कपिल शर्मा भी हैं।

प्रसिद्ध थिएटर और फिल्म कलाकार बेंजामिन गिलानी के बेटे, राहिल ने फिल्म के लिए अपना उत्साह साझा किया।

'तब्बू जी के साथ स्क्रीन साझा करना मेरे लिए सबसे समृद्ध, मजेदार और सीखने वाला अनुभव रहा है। मैं उनके छोटे भाई की भूमिका निभा रहा हूं और उनकी अभिनय क्षमता से पूरी तरह आश्चर्यचकित हूं। गली बॉय के बाद, क्रू जैसी फिल्म पर काम कर रहा हूं। राहिल ने कहा, जो पूरी तरह से अलग शैली है और मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण अनुभव है।

जब अभिनय की बात आती है, तो राहिल नए नहीं हैं। अपने पिता को नाम कमाते देखकर बड़े हुए राहिल ने भी बुनियादी बातों से सीखना शुरू किया। वह कई थिएटर समूहों से जुड़े रहे हैं और उन्होंने नसीरुद्दीन शाह, आकाश खुराना और पंडित सत्यदेव दुबे जैसे दिग्गजों के साथ काम किया है।

क्रू का निर्देशन राजेश ए कृष्णन ने किया है और यह 29 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

जेनिफर विंगेट ने 'रायसिंघानी वर्सेस रायसिंघानी' के सेट पर घुड़सवारी से जुड़ी एक दिलचस्प घटना बताई

भोपाल। जेनिफर विंगेट को स्क्रीन पर महिलाओं के मजबूत और आत्मनिर्भर किरदार निभाने के लिये जाना जाता है। अभी वह सोनी लिव के 'रायसिंघानी वर्सेस रायसिंघानी' में अनुष्का रायसिंघानी की भूमिका निभा रही हैं। उनके परफॉर्मेंस को न सिर्फ उनके प्रशंसकों से प्यार और सराहना मिली है, बल्कि इस शो के दर्शकों को भी वह खूब पसंद आ रही हैं। अनुष्का पेशेवर तौर पर दृढ़-संकल्पित, लेकिन निजी तौर पर संघर्ष कर रही एक वकील है। इस किरदार को बड़ी आसानी से निभाकर जेनिफर ने उसे हर घर में शोहरत दिलाई है। दिलचस्प बात यह है कि जेनिफर और अनुष्का का एक शौक मिलता-जुलता है और वह है घुड़सवारी। शो में उनके किरदार को भी आकस्मिक रूप से घुड़सवारी करने का मौका मिल गया।

इस विचित्र संयोग के बारे में जेनिफर ने बताया, ''मेरा हमेशा से मानना रहा है कि जिन्दगी के सफर में अपने शौक को भी शामिल कर लेना चाहिये। घुड़सवारी मेरे लिये सिर्फ एक शौक नहीं है, वह एक जुनून है, जो मुझे बेहद

पसंद है और मैं लगातार उसमें बेहतर बनना चाहती हूँ। महामारी के दौरान मुझे घुड़सवारी सीखने का मौका मिला और मेरी किस्मत खुल गई, जब 'रायसिंघानी वर्सेस रायसिंघानी' में मुझे अनुष्का का रोल मिला।

हालांकि, शो के सेट पर घोड़े से मेरी पहली मुलाकात काफी दिलचस्प रही। पहला घोड़ा हमारा साथ नहीं देना चाहता था और इंस्ट्रक्टर को भी उसे संभालने में संघर्ष करना पड़ रहा था। फिर मेरे समेत हर किसी को बड़ा आश्चर्य हुआ, जब जोश से भरा दूसरा घोड़ा एक बढ़िया साथी बन गया। इस तरह के पल ही किरदारों को निभाने का सफर यादगार और मजेदार बनाते हैं।''

'रायसिंघानी वर्सेस रायसिंघानी' में अनुष्का समेत कुछ कानूनी पेशेवरों की जिन्दगी दिखाई गई है। यह लोग पेचीदा कानूनी लड़ाईयों के साथ निजी दुविधाओं का सामना भी करते हैं। जेनिफर के अलावा इस सीरीज में करण वाही, संजय नाथ, जॉय सेनगुप्ता और रीम शेख की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। स्मृति शिंदे और हरविंदर अरोड़ा द्वारा निर्मित और अनिरुद्ध राजडेरकर द्वारा निर्देशित इस सीरीज की कहानी दमदार है, जिसमें कई ट्विस्ट् एवं टर्न्स आते हैं।

देखते रहिये 'रायसिंघानी वर्सेस रायसिंघानी', हर सोमवार से बुधवार रात 8 बजे सिर्फ सोनी लिव पर!

बाल श्रम अधिनियम के तहत जिला टास्क फोर्स की बैठक आयोजित

श्योपुर, कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड की अध्यक्षता में बालक एवं कुमार श्रमिक प्रतिषेध एवं विनियमन अधिनियम 1986 एवं उसके अंतर्गत निर्मित संशोधित नियम 2017 के अनुसार जिला टास्क फोर्स की बैठक का आयोजन किया गया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित उक्त बैठक में एडिशनल एसपी सतेन्द्र सिंह तोमर, डिप्टी कलेक्टर वायएस तोमर, महिला बाल विकास अधिकारी ओपी पाण्डेय, सीएमएचओ डॉ जेएस राजपूत, जिला शिक्षा अधिकारी रविन्द्र सिंह तोमर, डीपीसी डॉ पीएस गोयल, श्रम पदाधिकारी ओपी शर्मा, ममता फाउंडेशन से लल्लन प्रसाद गौड, जन साहस से रामलखन प्रजापति आदि उपस्थित थे।

कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड ने बैठक में निर्देश दिये कि बालक एवं कुमार श्रमिक प्रतिषेध एवं विनियमन अधिनियम 1986 एवं उसके अंतर्गत निर्मित संशोधित नियम 2017 के अनुसार बाल श्रमिक एवं कुमार श्रमिको की पहचान की जायें तथा अधिनियम के तहत उनके पुर्नवास के लिए कार्यवाही सुनिश्चित की जायें। उन्होंने कहा कि बाल श्रम में लगे 14 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के मामले में विधि अनुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जायें तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम में निहित प्रावधानो के तहत ऐसे बच्चों को शैक्षणिक गतिविधियों से जोडा जायें।

निर्वाचन के मद्देनजर मदिरा के अवैध क्रय-विक्रय, भण्डारण और परिवहन पर सख्ती से रोक लगायी जाये

संभागायुक्त श्री दीपक सिंह ने संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक में दिये निर्देश

इन्दौर। संभागायुक्त श्री दीपक सिंह ने आज वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से ली गई बैठक में निर्देश दिये हैं कि लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर मदिरा के अवैध क्रय-विक्रय, भण्डारण और परिवहन पर सख्ती से रोक लगायी जाये। डिस्टलरी की निगरानी व्यवस्थाओं को भी बेहतर रखा जाये। उड़नदस्तों को लगातार सक्रिय रखा जाये। कहीं भी मदिरा का अवैध रूप से क्रय-विक्रय, भण्डारण अथवा परिवहन नहीं हो यह सुनिश्चित किया जाये। निगरानी के लिये सीसीटीवी कैमरे भी लगाये जाये। संभागायुक्त श्री सिंह धार से वीसी में शामिल हुए। इस बैठक में पुलिस आयुक्त इंदौर श्री राकेश गुप्ता, आईजी ग्रामीण इंदौर श्री अनुराग, अपर आयुक्त वाणिज्यिककर श्रीमती रजनी सिंह सहित डीआईजी ग्रामीण इंदौर एवं खरगोन, संभाग के जिलों के कलेक्टर्स, पुलिस अधीक्षक, आबकारी और जीएसटी के संभागीय/जिला स्तरीय अधिकारी शामिल हुए।

बैठक में संभागायुक्त ने निर्देश दिए कि इंदौर संभाग में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से लोकसभा निर्वाचन सम्पन्न कराये जाने के लिये चाक-चौबंद व्यवस्थाएं रखी जायें। यह सुनिश्चित किया जाये कि निर्वाचन के दौरान किसी भी तरह से कोई भी मतदाताओं को प्रलोभित या प्रभावित नहीं कर सकें। मतदाता निर्भिक होकर बगैर प्रलोभन के मतदान कर सकें। निगरानी व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद रखा जाये। मदिरा दुकानों, बाटलिंग प्लांट, डिस्टलरी पर सीसीटीवी कैमरे लगाये जायें। मदिरा दुकानों का लगातार निरीक्षण किया जाये। सीमावर्ती क्षेत्रों पर विशेष निगरानी रखी जाये। संभागायुक्त श्री दीपक सिंह ने कहा कि संभाग के धार, अलीराजपुर और झाबुआ आदि जिलों में विशेष ध्यान दिया जाये। बैठक में निर्देश दिए गये कि बगैर दस्तावेज के गारमेंट, साड़ी आदि का भण्डारण नहीं हो। बगैर बिल के नए वाहनों का परिवहन नहीं हो। बोगस फर्मों पर नजर रखी जाये। जिला प्रशासन के सहयोग से सभी संबंधित विभाग पूर्ण समन्वय से कार्य करें। अवैध सामग्री की जप्ती एवं कार्यवाही के लिए एक एसओपी भी जारी की जाये। संदेहास्पद सामग्री के परिवहन एवं लेनदेन पर नजर रखी जाये। सूचना मिलने पर संबंधित विभाग पूर्ण समन्वय से कार्यवाही सुनिश्चित करें। बैठक में संभागायुक्त ने संभाग के सभी जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षकों से अवैध मदिरा के विरूद्ध जिले में की जा रही कार्यवाहियों के संबंध में जानकारी ली। सभी जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षकों ने अपने-अपने क्षेत्रों में अब तक की गई कार्यवाहियों की जानकारी दी। बताया गया कि संभाग में अवैध मदिरा के क्रय-विक्रय, भण्डारण और परिवहन पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। अवैध मदिरा को जप्त करने की कार्यवाही भी सख्ती से की जा रही है। संभागायुक्त श्री दीपक सिंह ने संभाग में अवैध मदिरा के विरूद्ध की जा रही कार्यवाहियों पर संतोष व्यक्त किया और सभी को अच्छे कार्य करने के लिए शुभकामनाएं भी दी। बैठक में आईजी श्री अनुराग ने कहा कि धार, अलीराजपुर और झाबुआ जिले में अवैध मदिरा के परिवहन पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाये। बड़े वाहनों के साथ ही छोटे वाहनों की भी सघन चेकिंग की जाये। मेन रूट के अलावा सरप्राइज रूट पर भी चेकिंग की जाये। इसके साथ ही वेयर हाउसों की भी सतत चेकिंग की जाये। सीमावर्ती जिलों से कॉर्डिनेट कर कार्य करें।

142 सीटो के लिए 388 आवेदन आये, लॉटरी निकालकर किया चयन

श्योपुर, सीएम राईज विद्यालय श्योपुर में कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को प्रवेश देने के लिए लॉटरी के माध्यम से चयन किया गया। उक्त कक्षाओं की 142 रिक्त सीटो के लिए 16 मार्च से 23 मार्च तक कुल 388 आवेदन प्रवेश के लिए प्राप्त हुए थे। लोक शिक्षण संचालनालय के निर्देशानुसार आज दोपहर 12 बजे विद्यालय परिसर में पालको के समक्ष लाटरी के माध्यम से रिक्त सीटो के लिए विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस अवसर पर संकुल प्राचार्य मनोज पाराशर, सीएम राईज विद्यालय के प्राचार्य अशोक खण्डेलवाल तथा विद्यालय के अन्य शिक्षक उपस्थित थे। प्राचार्य अशोक खण्डेलवाल ने बताया कि विद्यालय की 142 रिक्त सीटो के लिए 16 मार्च से 23 मार्च तक की अवधि तक प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित किये गये थे। इस प्रक्रिया के दौरान कुल 388 आवेदन प्राप्त हुए। इसी क्रम में आज लॉटरी के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया संपन्न की गई। उन्होने बताया कि लॉटरी के माध्यम से चयनित विद्यार्थियों की सूची तथा प्रतीक्षा सूची विद्यालय के सूचना पटल पर चस्पा की गई है। चयनित विद्यार्थियों को 01 अप्रैल से 06 अप्रैल तक आवश्यक दस्तावेज विद्यालय की प्रवेश शाखा में जमा कराने होगे, लॉटरी के माध्यम से चयनित विद्यार्थी यदि प्रवेश नही लेते है तो उनके स्थान पर संबंधित कक्षा की प्रतीक्षा सूची से विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

अनाधिकृत ढंग से कट-आउट, बैनर, पोस्टर, फ्लैक्स व झण्डियाँ लगाने पर प्रतिबंध

ग्वालियर । ग्वालियर शहर में कहीं भी अनाधिकृत ढंग से कट-आउट, बैनर, पोस्टर, फ्लैक्स, झण्डियाँ इत्यादि चुनाव प्रचार सामग्रियों का प्रदर्शन पूर्णतरू प्रतिबंधित कर दिया गया है। लोकसभा चुनाव के दौरान नगर निगम द्वारा किसी भी नए स्थान पर होर्डिंग्स एवं विज्ञापन की अनुमति जारी नहीं की जा सकेगी। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने जिले में स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव सम्पन्न कराने के उद्देश्य से इस आशय का प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है। उन्होंने इस आदेश के जरिए होर्डिंग व बैनर से प्रचार-प्रसार की नीति भी निर्धारित कर दी है। यह आदेश नगर निगम सीमा में लागू होगा। छावनी क्षेत्र मुरार में छावनी बोर्ड के मुख्य कार्यपालन अधिकारी यह व्यवस्था लागू करायेंगे।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने इस आदेश के जरिए स्पष्ट किया है कि लोकसभा चुनाव के दौरान नगर निगम क्षेत्र के सभी वैध एवं अनुमति प्राप्त स्थलों पर चुनाव से संबंधित राजनैतिक विज्ञापनों के प्रदर्शन के लिये नगर निगम से पूर्व अनुमति एवं अनापत्ति लेना अनिवार्य होगा। अनुमति व अनापत्ति प्रमाण-पत्र के आधार पर ही विभिन्न विज्ञापन एजेंसियाँ निर्धारित शर्तों के साथ शुल्क लेकर वैध स्थानों पर उम्मीदवारों एवं राजनैतिक दलों के विज्ञापनों का प्रदर्शन कर सकेंगे। निगम के क्षेत्राधिकार के सभी वैध विज्ञापन स्थानों पर राजनैतिक विज्ञापन प्रदर्शित कराने के लिये उम्मीदवारों, राजनैतिक दलों, संस्थाओं व व्यक्तियों को निर्धारित प्रारूप में आयुक्त नगर निगम को आवेदन देकर विधिवत अनुमति लेनी होगी। आवेदन पत्र के साथ विज्ञापन में प्रदर्शित की जाने वाली भाषा व विषयवस्तु भी बतानी होगी। इसी आधार पर नगर निगम द्वारा विहित शर्तों का पालन करते हुए अनुमति व अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी किया जाएगा।

आयुक्त नगर निगम की यह जिम्मेदारी होगी कि वह अधिकृत विज्ञापन एजेंसियों से सलाह कर तीन चरणों की अवधि के राजनैतिक विज्ञापनों के लिये चरणवार विज्ञापन की मानक दरों का निर्धारण करें। साथ ही इसकी सूचना जिला निर्वाचन कार्यालय को अनिवार्यतरू दी जाए, जिससे संबंधित प्रत्याशी के चुनावी व्यय में यह खर्चा जोड़ा जा सके। नगर निगम द्वारा अनुमति व अनापत्ति प्रदान करते समय अभ्यर्थियों व राजनैतिक दलों से निर्धारित शुल्क के अलावा किसी प्रकार का कोई अन्य शुल्क नहीं लिया जा सकेगा। आदेश में बार-बार स्पष्ट किया गया है कि यह अनुमति व अनापत्ति नगर निगम द्वारा पूर्व से स्वीकृत सूचीबद्ध स्थानों के लिये दी जाए। विज्ञापन एजेंसी आयुक्त नगर निगम द्वारा निर्धारित दर से ही राजनैतिक विज्ञापनों का शुल्क वसूल कर सकेंगे।

राजनैतिक विज्ञापनों के लिए जारी किए गए दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करने पर जोर दिया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशानुसार अनुमति देते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी एक व्यक्ति या दल का राजनैतिक विज्ञापन स्थलों पर एकाधिकार न हो जाए। समस्त राजनैतिक दलों एवं प्रत्याशियों को विज्ञापन प्रदर्शन का समान अवसर मिलना चाहिए। नगर निगम सीमा सहित ग्रामीण क्षेत्रों में शासकीय व सार्वजनिक सामुदायिक भवन, संपत्ति अथवा शासकीय जमीन पर किसी भी प्रकार का राजनैतिक विज्ञापन व प्रचार-प्रसार करना पूर्णतरू प्रतिबंधित रहेगा।

ग्रामीण क्षेत्र में भी नगर निगम की तर्ज पर लागू होगी विज्ञापन संबंधी व्यवस्था

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने आदेश में यह भी स्पष्ट किया है कि लोकसभा आम निर्वाचन के दौरान जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र ग्वालियर ग्रामीण, भतरवार व डबरा में भी नगर निगम की तर्ज पर चुनावी विज्ञापन की व्यवस्था लागू की गई है।

भवन स्वामी की लिखित सहमति और नगर निगम से अनापत्ति लेनी होगी

निजी भवन स्वामी की लिखित सहमति एवं नगर निगम की अनापत्ति प्राप्त करने के बाद झण्डे, पोस्टर, बैनर, दीवार लेखन व अस्थायी फ्लैक्स बोर्ड किसी निजी भवन पर लगाए जा सकेंगे। नगर निगम से यह अनापत्ति प्राप्त करने के लिये तीन दिवस के भीतर आवेदन जमा करना होगा। अनापत्ति प्रमाण-पत्र के लिये जमा की गई राशि की रसीद और भवन स्वामी द्वारा लिए जाने वाले किराए की रसीद व संलग्न प्रोफार्मा रिटर्निंग ऑफीसर अथवा सहायक रिटर्निंग ऑफीसर के कार्यालय में प्रस्तुत करना होगा। झण्डे, बैनर, पोस्टर, फ्लैक्स बोर्ड पर ऐसा कुछ भी न लिखा जाए जिससे विभिन्न समुदायों में असंतोष उत्पन्न हो और शांति भंग होने की संभावना बने। इन दिशा-निर्देशों का उल्लंघन होने पर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम एवं भारतीय दण्ड विधान की धारा-188 के तहत कार्रवाई की जायेगी।

मतदान दिवस को रहेगा अवकाश

ग्वालियर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किए गए लोकसभा आम निर्वाचन कार्यक्रम के तहत ग्वालियर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में मंगलवार 7 मई को मतदान होगा। सभी मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर सकें, इस उद्देश्य से राज्य शासन द्वारा निगोशिएबल इन्सट्रूमेंट्स एक्ट की धारा 25 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मतदान दिवस 7 मई को सार्वजनिक अवकाश तथा सामान्य अवकाश घोषित किया हैं।

लोकसभा चुनाव में छिंदवाड़ा का सांसद भाजपा का कार्यकर्ता बनेगा: कैलाश विजयवर्गीय

प्रदेश लोकसभा चुनाव प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह एवं प्रदेश् शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने छिन्दवाड़ा जिले के चौरई में कार्यकर्ता सम्मेलन एवं जिला कार्यालय में बैठक को किया सम्बोधित

छिंदवाड़ा। हमारे पूर्वजों ने मंदिर टूटते हुए देखा, हम सौभाग्यशाली हैं कि मंदिर बनते हुए देख रहे हैं। अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराने वाले जनता से वोट मांगने का अधिकार खो चुके हैं। छिंदवाड़ा के भाजपा कार्यकर्ताओं का जोश और उत्साह बता रहा है कि इस लोकसभा चुनाव में छिंदवाड़ा का सांसद भाजपा का कार्यकर्ता बनेगा। इस चुनाव में छिंदवाड़ा लोकसभा में कमल खिलाकर आप सभी कार्यकर्ता मध्यप्रदेश को कांग्रेस मुक्त प्रदेश बनाने के लिए कार्य करें। यह बात प्रदेश लोकसभा चुनाव प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह एवं प्रदेष शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने छिन्दवाड़ा जिले के चौरई में कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कही।

कांग्रेस मुक्त प्रदेश बनाने के लिए कार्य करे कार्यकर्ता

प्रदेष शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि चौरई के भाजपा कार्यकर्ताओं का जोश और उत्साह बता रहा है कि इस लोकसभा चुनाव में छिंदवाड़ा का सांसद भाजपा का कार्यकर्ता बनेगा। कांग्रेस नेता कमलनाथ पिछले 40 साल से छिंदवाड़ा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, लेकिन आज भी छिंदवाड़ा को विकास की तलाश है। प्रदेश की 28 लोकसभा क्षेत्रों में भाजपा के सांसद हैं। इस चुनाव में छिंदवाड़ा लोकसभा में कमल खिलाकर आप सभी कार्यकर्ता मध्यप्रदेश को कांग्रेस मुक्त प्रदेश बनाने के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि देश के आजाद होने के बाद कांग्रेस नेता व तत्कालीन प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर में धारा 370 लगाई थी। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने के लिए जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी बलिदान हो गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने धारा 370 हटाकर भारतीय जनता पार्टी के संकल्प को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने 29 लोकसभा सीटें जीतने का लक्ष्य मध्यप्रदेश को दिया है। आप सभी पार्टी कार्यकर्ता हर बूथ पर 370 नए वोट पार्टी से जोड़ने और 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने के साथ छिंदवाड़ा लोकसभा को ऐतिहासिक बहुमत से जीतने के लिए कार्य करें। इस दौरान मंच पर पार्टी की प्रदेष महामंत्री व सांसद सुकविता पाटीदार, लोकसभा प्रभारी नरेश दिवाकर, सह प्रभारी संतोष पारिक, पूर्व विधायक चौधरी चंद्रभान सिंह, गंभीर सिंह, प्रदेश प्रवक्ता अजय धवले उपस्थित रहे। प्रदेश लोकसभा चुनाव प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह एवं प्रदेष शासन के मंत्री व क्लस्टर प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय ने छिन्दवाड़ा जिला भाजपा कार्यालय में छिंदवाड़ा के पार्षद, पूर्व पार्षद, मंडल अध्यक्ष एवं प्रभारियों की बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि महामहिम राष्ट्रपति के साथ ही हमारे जैसे जनप्रतिनिधि कभी न कभी पार्षद रहे हैं।

कांग्रेस को केवल सनातन धर्म में ही बुराइयां दिखती हैं: डॉ. नरोत्तम मिश्रा

सागर क्लस्टर प्रभारी व पूर्व मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने शमशाबाद के आर.एम.गार्डन में कार्यकर्ता बैठक को संबोधित किया

विदिशा। यह लोकसभा चुनाव देश की दिशा और दशा को तय करने वाला चुनाव है। भाजपा 2047 तक भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए कार्य कर रही है। भारत विश्व गुरू तभी बन सकता है, जब देश में ऐतिहासिक बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बने और नरेन्द्र मोदी जी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनें। हमारा मुकाबला राष्ट्र विरोधियों से है। कांग्रेस ने भगवान राम के अस्तित्व पर ही सवाल उठाए थे और अब भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकराकर देष की जनता का अपमान किया है। कांग्रेस को केवल सनातन धर्म में ही बुराइयां दिखती है। यह बात सागर क्लस्टर प्रभारी व पूर्व मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने गुरूवार को सागर लोकसभा के शमशाबाद स्थित आर एम गार्डन में कार्यकर्ता बैठक को संबोधित करते हुए कही। डॉ. मिश्रा ने कहा कि नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाया और अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण कराकर भगवान श्रीराम की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कराई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार में देश की सीमाएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं। नरेन्द्र मोदी जी ने हमें बूथ पर 370 वोट बढ़ाने और भाजपा गठबंधन को 370 से अधिक लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त करने का लक्ष्य दिया है। आप सभी कार्यकर्ता हर बूथ पर 370 नए मतदाताओं को पार्टी से जोड़ने का कार्य करें।

डॉ मिश्रा से ने कहा कि राहुल गांधी विदेश में जाकर पाकिस्तान और चीन की तारीफ करते है और देश के लोकतंत्र पर उंगली उठाते है। अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराने वाले जनता से वोट मांगने का अधिकार खो चुके हैं। भाजपा देश को मजबूत कर रही है, वही कांग्रेस देश को कमजोर करने का प्रयास कर रही है। कमलनाथ महान भारत को बदनाम भारत बताते है।

टेटू गैंग का सदस्य पकड़ा, पिता की मारपीट में था फरार

ग्वालियर। शरीर पर हथियारों के टेटू बनवाकर रंगबाजी करने वाले एक बदमाश को बेहट थाना पुलिस ने दबोचा है और पकड़े गए बदमाश से पुलिस ने एक कट्टा बरामद किया है। पुलिस पूछताछ में पता चला है कि इसके अन्य साथी भी है जो शरीर पर हथियारों के टेटू बनवा कर लोगों को धमकाने का काम करते है।

एसडीओपी बेहट संतोष पटेल ने बताया कि सूचना मिली थी कि बेहट इलाके में एक बदमाश लोगों को शरीर पर बने हुए हथियारों के टेटू दिखा कर धमका रहा है। सूचना मिलते ही एसआई सुरेश सिंह कुशवाह को पुलिस बल के साथ आरोपी को दबोचने के लिए पहुंचाया। पुलिस जब मौके पर पहुंची तो एक युवक वहां से भागने लगा, जिसका पीछा कर पुलिस ने दबोचा और उसकी तलाशी ली तो उसके पास से एक कट्टा और जिन्दा कारतूस बरामद किया है। पुलिस ने पकड़े गए युवक के शरीर पर देखा तो कई हथियारों के टेटू बने हुए थे। पकड़े गए बदमाश को थाने लाकर पूछताछ की तो उसने बताया कि उसकी तरह ही उसके कुछ अन्य साथी भी इसी तरह टेटू बनवाएं है और वह भी लोगों को धमकाते है। बताया गया है कि घर से बाहर जाने और हथियारों के टेटू पर धमकाने से रोकने पर पकड़े गए आरोपी अकबर स्या ने अपने पिता गुड्डू स्या निवासी पारेसन की मारपीट की थी, जिसकी शिकायत बिजौली थाने में दर्ज है। पुलिस पकड़े गए आरोपी से पूछताछ कर उसके अन्य साथियों की जानकारी जुटा रही है, जिससे उनके खिलाफ भी कार्रवाई कर उनसे हथियार बरामद किए जा सके।

सभी एसडीएम अपने-अपने अनुविभाग का स्वीप कैलेण्डर तैयार करें : कलेक्टर

ग्वालियर। जिले के सभी एसडीएम अपने-अपने अनुविभाग के लिये स्वीप (सिस्टमेटिक वोटर्स एज्यूकेशन एण्ड इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन) कैलेण्डर तैयार करें। साथ ही कैलेण्डर में मतदाताओं को जागरूक करने के लिये शामिल की गई सभी गतिविधियों को सुनियोजित एवं प्रभावी ढंग से धरातल पर उतारें, जिससे भारत निर्वाचन आयोग की मंशा के अनुरूप मतदान प्रतिशत में इजाफा हो। यह निर्देश कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने गुरूवार को कलेक्ट्रेट के सभागार में स्वीप गतिविधियों की समीक्षा बैठक में दिए। उन्होंने मतदाताओं को जागरूक करने के लिये सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का व्यापक इस्तेमाल करने पर भी बल दिया।

जिले में मतदाताओं को जागरूक करने के लिये स्वीप के तहत प्रभावी रणनीति बनाई गई है। प्रयास ऐसे होंगे कि एक दू एक मतदाता तक यह संदेश पहुँचे कि उनका वोट लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे जिले में मतदान प्रतिशत में बड़ा इजाफा हो सके। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कहा कि अगले एक हफ्ते तक मतदाता सूची में 18 वर्ष से अधिक आयु के छूटे हुए लोगों के नाम जोड़ने पर केन्द्रित जागरूकता गतिविधियों पर फोकस करें। उन्होंने कहा इस काम में विभिन्न सामाजिक संगठनों, मार्केट एसोसिएशन, मोहल्ला समितियों इत्यादि का सहयोग लिया जा सकता है।कलेक्टर ने कहा कि स्वीप के तहत हर मतदाता तक यह संदेश पहुँचे कि हमारा वोट प्रजातांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा युवा, महिला, बुजुर्ग व दिव्यांग मतदाताओं को ध्यान में रखकर स्वीप के तहत अलग-अलग प्रकार की प्रभावी गतिविधियाँ आयोजित करें। कलेक्टर ने हाट बाजारों के दिन और स्थानीय बोली में प्रभावी कार्यक्रम आयोजित करने पर बल दिया। नगर निगम आयुक्त हर्ष सिंह ने जानकारी दी कि ग्वालियर शहर में स्वीप के तहत मतदाताओं को जागरूक करने के लिये वृहद प्लान तैयार किया गया है। नगर निगम द्वारा शहरवासियों के साथ किए जा रहे पत्राचार में भी मतदान के महत्व पर केन्द्रित स्लोगन प्रदर्शित किए जा रहे हैं। साथ ही एक शाम मतदाता के नाम, क्रिकेट मैच, बड़े गुब्बारे, मल्टी व गेट बंद कॉलोनियों के लोगों के साथ बैठकें इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार ने बताया कि ग्रामीण अंचलों में किसानों सहित सभी आयु वर्ग के मतदाताओं को ध्यान में रखकर स्वीप प्लान तैयार किया गया है। मतदान की तिथि तक विभिन्न चरणों में युवाओं, महिलाओं व दिव्यांगों पर केन्द्रित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार एवं अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार सहित जिले के सभी एसडीएम व विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

मतदान दिवस को पेयजल के लिए नामजद ड्यूटी लगाएँ

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती रुचिका चौहान ने निर्देश दिए कि गर्मी को ध्यान में रखकर हर मतदान केन्द्र पर मतदाताओं को पानी पिलाने के लिये कर्मचारियों की नामजद ड्यूटी लगाएँ। साथ ही जहाँ मतदाताओं की कतार लगती हो वहाँ छाया की बेहतर से बेहतर व्यवस्था की जाए। मतदान केन्द्र परिसर में धात्री माताओं व वरिष्ठ नागरिकों के बैठने की अलग-अलग व्यवस्था करें। साथ ही वहाँ फ्लैक्स भी लगवाएँ। उन्होंने पर्याप्त संख्या में मॉडल बूथ और पिंक बूथ बनाने पर भी बल दिया।

एमआर संघ का होली मिलन समारोह सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। गत दिवस एमआर संघ ग्वालियर का होली मिलन कार्यक्रम सरस्वती स्कूल बाड़ा गोरखी में सम्पन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि जन संपर्क अधिकारी केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री भारत सरकार एवं वरिष्ठ समाज सेवी केशव पांडे एवं विशिष्ट अतिथि विधा भारती प्राचार्य गोविंद नारायण शर्मा रहे।

मुख्य अतिथि श्री पांडे ने कहा कि कालांतर में संघ ने अभूतपूर्व कार्य किए हैं जिनका परिणाम आज देश एवं समाज में दिखाई देने लगा है। श्री पांडे के द्वारा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में हर स्तर पर समाज उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं, जो कि ईश्वर कृपा का ही कारण है, दवा प्रतिनिधियों को भी संघ की विचार धारा से जुड़ कर समाज उत्थान के लिए प्रयास एमआर संघ के साथ करना चाहिए।

विशिष्ठ अतिथि श्री शर्मा ने कहा कि कम्युनिस्ट विचार धारा से टक्कर लेते हुए भी संघ के बैनर तले एमआर संघ का उदय एवं तीव्र गति से विस्तार आज भारत देश में वाकई हर्ष का विषय है। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर एवम दीप प्रज्वलन कर श्रमिक गीत के साथ हुई। श्रमिक गीत कार्यकारिणी सदस्य मोहम्मद जुनेद द्वारा लिया गया तथा भारत माता वंदना यशवंत पाल सहसचिव द्वारा की गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष एवं संभाग प्रभारी एमआर संघ एवं जिला मंत्री भारतीय मजदूर संघ विजयंत नायक द्वारा की गई। संचालन जिला सचिव मयंक समाधियां द्वारा एवं आभार जिला उपाध्यक्ष अजीत शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम समापन पर चंदन से तिलक कर सभी को होली की शुभकामनाएं दीं गई एवं अल्पाहार उपरांत कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कार्यक्रम में सहसचिव वीरेंद्र सिंह राजपूत, सहसचिव मनीष शर्मा, सहसचिव कुलदीप शर्मा, सहसचिव यशवंत पाल, जिला संयोजक अभिषेक शुक्ला, कार्यकारिणी सदस्य विजय सिंह चौहान, सदस्य चेतन भाटिया, महेंद्र पचोरी, अमन दुबे, अंशुल चौहान, अनुभव गुप्ता, प्रभुदयाल कुशवाह, हरेंद्र सिंह, अभिषेक कुमार, विकास राजपूत, आकाश गुप्ता, वरिष्ठ साथी ओमप्रकाश गिड़वानी, जितेंद्र जयरथ एवं नरेंद्र त्रिपाठी आदि उपस्थित थे।

2 अप्रैल को होगा बाबा श्याम का कीर्तन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। श्री श्याम मित्र परिवार कैलाश टॉकीज के द्वारा 02 अप्रैल को बाबा श्याम का भव्य कीर्तन रंगमहल गार्डन मे आयोजित किया जायेगा, जिसमें बाबा श्याम का भव्य श्रृंगार वृंदावन एवं कलकत्ता के कलाकारों द्वारा किया जायेगा। बाबा के भजनों की प्रस्तुति सुविख्यात भजन गायक संजय मित्तल कलकत्ता, निशा गोविंद जयपुर, अभिषेक नामा जयपुर द्वारा भजन की प्रस्तुति दी जायेगी। उक्त जानकारी श्री श्याम मित्र परिवार के संरक्षक गिरधारी अग्रवाल द्वारा दी गई।

दूसरे चरण के लिये आज पहले दिन 1 अभ्यर्थी ने भरा 1 नाम निर्देशन पत्र

भोपाल। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन-2024 के निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार दूसरे चरण के लिये नाम निर्देशन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 28 मार्च से प्रारंभ हो गई। दूसरे चरण के पहले दिन लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-17 होशंगाबाद में एक अभ्यर्थी ने एक नाम निर्देशन पत्र दाखिल किया। शेष 6 लोकसभा संसदीय क्षेत्रों में किसी भी अभ्यर्थी ने कोई भी नाम निर्देशन पत्र दाखिल नहीं किया।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि नाम निर्देशन पत्र दाखिल किये गये अभ्यर्थियों के शपथ पत्र एवं अन्य जानकारियां भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट की लिंक **https://affidavit.eci.gov.in/** पर देखी जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 4 अप्रैल है। इसके अगले दिन 5 अप्रैल को नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा की जाएगी। नाम निर्देशन पत्र भर चुके प्रत्याशी 8 अप्रैल तक अपने नाम वापस ले सकेंगे। दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल को मतदान होगा। सभी चरणों के मतदान की मतगणना 4 जून को होगी।

झगड़े में नाम लेने पर गुस्सायें युवक ने मारी गोली, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

ग्वालियर। झगड़े में झूठा नाम शामिल कराने से नाराज बदमाश ने युवक को गोली मार दी। घटना जनकगंज थाना क्षेत्र के निम्बाजी की खो पानी की टंकी के पास की है। घटना का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को उपचार के लिए भर्ती कराकर आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर आरोपी को दबोच लिया है। पुलिस ने पकड़े गए बदमाश से पूछताछ शुरू कर दी है।

जनकगंज थाना प्रभारी विपेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि निम्बाजी की खो पानी की टंकी के पास रहने वाले 23 दीपक माहौर पुत्र वीरेन्द्र माहौर को दो दिन पहले ऋषिकेश पाल ने गोली मार दी थी। गोली लगने पर पुलिस ने ऋषिकेश पाल के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर लिया था। होलिका दहन की रात दो पक्षों में विवाद हुआ था तो इस मामले में पुलिस के पास ऋषिकेश पाल का नाम भी विवाद करने वालों में पहुंचा था, जबकि ऋषिकेश उस समय मथुरा में था। जब वह वापस आया तो उसे इसका पता चला। साथ ही पता चला कि उसका नाम दीपक ने बताया है तो वह उसके पास पहुंचा और उससे विवाद करने लगा और धमकी दी कि अगर वह उसे जान से मार देगा तो वह उसका क्या कर लेगा। इसके बाद ऋषिकेश ने कमर से कट्टा निकाला तो वह घर की तरफ भागा तब ऋषिकेश ने उस पर फायर कर दिया। गोली दीपक के पैर में लगी। गोली मारने के बाद आरोपी भाग निकला। वारदात के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की। पुलिस लगातार उसके संभावित स्थानों पर दबिश दे रही थी कि सूचना मिली कि वह ग्वालियर से भागने की तैयारी में है और अभी रॉक्सीपुल के पास है। इसका पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी को दबोच लिया। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

स्वामित्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए श्रीसिद्धीविनायक प्रिन्टर्स, 26 बी, प्रेस कॉम्पलेक्स जोन -1 एम.पी. नगर भोपाल मध्यप्रदेश से मुद्रित एवं 5-अपूर्वा एन्क्लेव, अयोध्या बाईपास, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। आर.एन.आई नं. MPHIN/2007/18768
संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे 94251-26060, संयुक्त संपादक- नीरज शिवहरे 9827359400, सहायक संपादक- संजय माकवे 9425375149, भोपाल कार्यालय- 5 अपूर्वा एन्क्लेव, अयोध्या बाईपास, भोपाल सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा।